: चतुर्थ अध्याय :

"विवेच्य कहानियों में नारी संवेदना के विविध रूप"

विवेच्य कहानियों में नारी संवेदना के जो विविध रूप मिलते हैं, उनको मुख्यत: दो भागों में विभाजित कर वर्गीकृत किया जा सकता है। एक विशेषताओं के आधार पर तथा दूसरा रिश्तों के आधार पर। नारी अपने जीवन में जाने कितने रूपों की भूमिका अदा करती है। वह एक परिवार में बेटी, बहन, पत्नी, माँ आदि बहुत-से रूप अपने आप में संजोए रखती है।

मन्नू भंडारी की कहानियों में हमें प्राय: नारी के सभी रूप चित्रित हुए मिलते हैं। उन्होंने नारी के प्रत्येक रूप को विविध दृष्टिकोणों से चित्रित किया है और वे यथार्थता पर आधारित हैं। नारी के इन रूपों में, मैंने प्रथम विशेषता के आधार पर जो नारी के विविध रूप हैं, उनका विश्लेषण किया है।

4.1 नारी संवेदना के विविध रूप : विशेषता के आधार पर :-

4.1.1 परित्यक्ता नारी :-

परित्यक्ता नारी अर्थात वह नारी जिसे पति ने छोड़ दिया हो, अर्थात या तो वह बाकायदा तलाक द्वारा छोड़ी गयी हो अथवा बिना किसी कानूनी तौर पर उसे छोड़ दिया गया हो।

मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में परित्यक्ता नारी की व्यथा का भी चित्रण किया है। ये परित्यक्ता नारियाँ अलग- अलग ढंग से अपना जीवन व्यतीत करती हैं। इनके समक्ष समस्याएँ भी अलग-अलग हैं। 'अकेली' कहानी में सोमा बूआ हमारे सामने एक परित्यक्ता नारी के रूप में आती है। सोमा बूआ का परित्यक्ता होना कहानी की निम्नांकित पंक्तियों से सिद्ध होता है -

"सोमा बूआ बुढ़िया है।
सोमा बूआ परित्यक्ता हैं।
सोमा बूआ अकेली हैं।"[1]

---

1. मन्नू भंडारी - श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ. 54

हालाकि सोमा बूआ के पति हैं, फिर भी वे परित्यक्ता का जीवन जीने के लिए विवश है। सोमा बूआ के पति साल के ग्यारह महीने तीर्थ यात्रा करते हैं और एक महीना घर पर बिताते हैं। सोमा बूआ के पति का एक महीने के लिए आना भी न आने के बराबर ही है। क्योंकि उनके आते ही दोनों में बार-बार नोंक-झोंक शुरू हो जाती है - "जब तक पति रहते, उनका मन और भी मुरझाया हुआ रहता। क्योंकि पति के स्नेहहीन व्यवहार का अंकुश उनके रोजमर्रा के जीवन की अबाध गति से बहती स्वछंद धारा को कुंठित कर देता। उस समय उनका घुमना-फिरना, मिलना- जुलना बंद हो जाता और सन्यासी जी महाराज से यह भी नहीं होता कि दो मीठे बोल बोलकर सोमा बूआ को एक ऐसा सम्बल ही पकड़ा दे, जिसका आसरा लेकर वे उनके वियोग के ग्यारह महीने काट दे।"[1]

सोमा बूआ का जवान बेटा मर चुका है। इसीलिए सोमा बूआ घर में अकेली है। वह अपना अकेलापन दूर करने के लिए पास-पड़ोसियों के विविध उत्सवों, त्यौहारों में शामिल होकर वहाँ जी-तोड़ मेहनत करती है। परंतु सोमा बूआ के पति को यह सब भाता नहीं है। सोमा बूआ पति के होते हुए भी परित्यक्ता का जीवन जी रही है। उसके पति का व्यवहार सोमा बूआ को टीस पहुँचाता है। इसीलिए वह कहती है - "यह काम तो मरदों का होता है, मैं तो मर्दवाली होकर भी बेमर्द ही हूँ।"[2]

'रानी माँ का चूबतरा' की गुलाबी एक परित्यक्ता नारी है। उसके पति ने उसे छोड़ दिया है। गुलाबी अपने दो बच्चों को दिन-रात की मजदूरी करके पालती है। गुलाबी का पति उसके पास न होने के कारण गाँव का एक नौजवान उसे बूरी नजर से देखता है। उसे अकेले ही अपनी और बच्चों की रक्षा का बोझ उठाना पड़ता है। इसीलिए वह गुस्से में आकर कहती है - "तुम्हें तो नहीं कोस रही ? कोस रही हूँ उस दारूखोर को जो मेरी जान को ये कीड़े-मकोड़े छोड़ गया।"[3] इस तरह गुलाबी अपने बच्चों को पालती हुई एक परित्यक्ता का जीवन व्यतीत करती है।

"बंद दराजों का साथ' की मंजरी भी एक परित्यक्ता नारी है।

---

1. मन्नू भंडारी - श्रेष्ठ कहानियाँ, पृष्ठ. 54

2. वही, पृष्ठ. 57

3. मन्नू भंडारी - यही सच है, पृष्ठ. 119

4.1.2 शोषित नारी / पीड़ित नारी :-

मन्नू भंडारी ने अपनी बहुत-सी कहानियों में हर वर्ग की शेषित नारी का चित्रण किया है। इन कहानियों में केवल अनपढ़ गँवार औरतों के शोषण का चित्रण नहीं हुआ बल्कि शिक्षित नौकरी पेशा स्त्रियाँ भी किस तरह शोषित होती है।इसका भी भली भाँति चित्रण किया गया है।

'ईसा के घर इंसान' में धर्म के नाम पर स्त्रियों पर अत्याचार किए जाते हैं। चर्च में युवतियों को जबरदस्ती नन बनाया जाता है। स्वच्छंद जीवन जीने का अधिकार उनसे छीन लिया जाता है। जो लडकियाँ स्वभाव से चंचल हैं और वे नन बनने के लिए तैयार नहीं हैं, उन्हें फादर के पास आत्मशुद्धि के लिए ले जाया जाता है। आत्मशुद्धि के उपरांत प्रत्येक चंचल लडकी के स्वभाव में ऐसी शांति आ जाती है कि वह अपना अस्तित्व खो देती है। यह आत्मशुद्धि, आत्मशुद्धि न होकर आत्मशुद्धि के नाम पर फादर द्वारा युवतियों पर किया गया बलात्कार है। यह आत्मशुद्धि चर्च में बहुत -सी युवतियों की हुई है। इस कहानी में ऐसी शोषित स्त्रियों का चित्रण हुआ है जो धर्म के ठेकेदार के हाथों बर्बाद की जाती हैं। इन शोषित नारियों में ऐनी, जेनी, जूली और लूसी सम्मिलित हैं। इस कहानी के विषय में गुलाबराव हांडे अपनी पुस्तक 'मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य' में लिखते हैं कि - ''तथाकथित नैतिक आदर्शों की आड़ में खुले आम इस प्रकार का वासना-काण्ड चर्च जैसे पवित्र स्थल पर चल रहा है। एक- एक करके सभी फादर रेवरैण्ड की विकृति वासना का शिकार हो जाती है। किंतु यहाँ नारी के सच्चे तथा मुक्ति -कामी हृदय का स्पदंन, द्वंद्व और वर्तमान विषम परिस्थितियों से विद्रोह की दृष्टि से सशक्त चित्रण दृष्टव्य है।''[1]

'अभिनेता' कहानी में एक शिक्षित, कमानेवाली, मशहूर अभिनेत्री भी किस प्रकार शोषण का शिकार होती है, इसका चित्रण किया गया है। रंजना और दिलीप की मुलाकात एक पार्टी में होती है और धीरे- धीरे मुलाकाते बढ़ती जाती हैं और परिणामत: दोनों एक-दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। रंजना पूरी तरह से दिलीप के व्यक्तित्व से प्रभावित हो जाती है। दिलीप भी अपनी मीठी-माठी बातों से रंजना को खुश करता रहता है। दोनों विवाह करने का फैसला करते हैं। परंतु एक दिन दिलीप बिजनेस के सिलसिले मे रंजना से बारह हजार रूपये ले जाता है। उसके बाद बहुत दिनों तक उसका कुछ पता नहीं

---

1. गुलाबराव हांडे - मन्नू भंडारी का कथा साहित्य, पृष्ठ. 58

चलता। इसीलिए रंजना उसके घर जाती है। वहाँ उसे पता चलता है कि अब तक दिलीप उसे धोखा ही देता रहा। क्योंकि उसकी बहुत-सी प्रेमिकाएँ भी हैं, वह विवाहित भी है और एक बच्ची का बाप भी है। इससे पहले भी किसी से बड़ी रक्कम उधार ले चुका है, जो लौटाई भी नहीं है। रंजना को दिलीप की असलियत का पता चलने पर वह सोचती है कि दिलीप तो मुझसे भी बड़ा अभिनेता निकला। रंजना जैसी पढी-लिखी औरत भी किसी पुरूष के शोषण का शिकार होने से नहीं बच पाती।

कार्यालयों में कार्यरत बहुत-सी स्त्रियाँ भी किसी न किसी प्रकार शोषित हैं। कार्यालय में शोषित नारी की कहानी है 'स्त्री सुबोधिनी'।इस कहानी की नायिका 'मैं' प्रौढ़ कुमारिका है और अपने कार्यालय के अधिकारी शिंदे के प्रेम जाल में फँस जाती है। शिंदे विवाहित होते हुए उससे शारीरिक संबंध स्थापित करता है। वह उसे शादी के झूठे दिलासे देकर उसका सब कुछ हासिल करता है।परंतु जब 'मैं' को उसकी सच्चाई का पता चलता है तो वह बहुत पछताती है तथा अन्य स्त्रियों को उपदेश देती है कि कभी भी विवाहित आदमी से प्रेम न करे। इस कहानी में एक चोट खाई हुई नारी अन्य स्त्रियों को चोट खाने से बचाना चाहती है।

किसी परिवार में यदि मुखिया को निर्दोष होते हुए भी जेल की चारदीवारी में मुकदमे का फैसला होने तक दिन बिताने पड़े तो उसकी और उसके घर की हालत बद से बत्तर हो जाती है। इसका चित्रण मन्नू भंडारी ने अपनी कहानी 'सजा' में किया है। आशा, जो इस परिवार की बेटी है, घर के ऐसी हालत में बहुत समझदारी से हर मुश्किल, परेशानी को चूपचाप सहन करती है। आशा के पिता पर कार्यालय में चोरी करने का आरोप लगाया जाता है। इस बात पर उसके स्कूल की लड़कियाँ उसे ताने देती हैं।परंतु आशा उन्हें कोई जवाब नहीं देती। पिता जेल में होने के कारण उसके परिवार को आर्थिक तंगी से गुजरना पड़ता है। इसका परिणाम आशा पर भी होता है। आशा को बिना कुछ बोले सारी मुसीबतों को झेलना पड़ता है। उसे अपनी बीमार माँ को छोड़कर अपनी चाची के यहाँ, जो बहुत क्रुर है, रहना पड़ता है। घर का सारा काम उसे अकेले ही करना पड़ता है। उस पर भी चाची के ताने ही सुनने पड़ते है। वह कालेज की पढ़ाई भी नहीं कर पाती। मन्नू भंडारी ने इस कहानी में न्याय व्यवस्था पर टीका की है। एक परिवार को न्याय व्यवस्था की चक्की में किस तरह पीसा जाता है और एक किशोरवयीन लड़की का शोषित जीवन जीना असहाय बन जाता है। इसका चित्रण बखूबी हुआ है। रामदरश मिश्र इस कहानी के विषय में अपनी पुस्तक 'हिन्दी कहानी : अंतरंग पहचान' में लिखते हैं -'''सजा' में मानवीय यातना के संदर्भ में शासन

व्यवस्था और न्याय की असंगतियों का पर्दाफाश किया है तथा मनुष्य को तोड़ देने वाले अनेक प्रभावों की व्यंजना की गई है।''[1]

'त्रिशंकु' कहानी एक पीड़ित नारी के दृष्टिकोण से सशक्त कहानी है। आधुनिकता का ढोंग करके जो व्यक्ति न तो आधुनिक बन पाते हैं और न ही परंपरा को छोड़ पाते हैं। ऐसे त्रिशंकु व्यक्तियों पर यह कहानी आधारित है।

तनू अपने माँ बाप की इकलौती बेटी है। उसके माँ और पिताजी ने प्रेम विवाह किया है। इस प्रेम विवाह के लिए तनू की माँ को अपने पिताजी से विद्रोह करना पड़ा था। परंतु जब उनकी बेटी शेखर नामक लड़के से प्रेम करती है तो उसकी माँ का रवैया तून के नाना की तरह हो जाता है। तनू अपनी माँ के रवैये से हैरान रह जाती है। ''बित्ते-भर की लड़की और करतब देखो इनके ! जितनी छूट दो उतने ही पैर पसरते जा रहे है इनके। झापड़ दूंगी तो सारा रोमांस सड़ जायेगा दो मिनट में ----।''[2] माँ के इन शब्दों पर तनू तिलमिला जाती है। इतना कहकर उसकी माँ को अपनी गलती का अहसास भी होता है। वह कहती है - ''पहले तो छूट दो और फिर जब आगे बढ़े तो खींचकर चारो खाने चित कर दो। यह भी कोई बात हुई भला।''[3] परंतु फिर भी उनमें बीच-बीच में नाना का रूप आ ही जाता । तनू अपनी माँ को समझाना चाहती है - ''ममी, जो चलेगा, वह गिरेगा भी और जो गिरेगा, वह उठेगा भी और खुद ही उठेगा उसे किसी की जरूरत नहीं है। ''[4] माँ के इस दोहरे व्यक्तित्व से तनू पीड़ित है। वह समझ नहीं पाती कि आखिर उसकी माँ क्या चाहती है ? इसीलिए वह कहती है - ''नाना पूरी तरह नाना थे शत-प्रतिशत -और इसी से ममी के लिए लड़ना कितना आसान हो गया होगा। पर इन ममी से लड़ा भी कैसे जाए जो एक पल नाना होकर जीती हैं तो एक पल ममी होकर।''[5] इस विषय में डॉ. कृष्णा रैणा अपनी पुस्तक 'हिन्दी कथा

1. रामदरश मिश्र - हिन्दी कहानी : अंतरंग पहचान, पृष्ठ. 171
2. मन्नू भंडारी- त्रिशंकु, पृष्ठ. 74
3. वही, पृष्ठ. 76
4. वही, पृष्ठ. 76
5. मन्नू भंडारी- त्रिशंकु, पृष्ठ. 81

में लिखते हैं - ''वह अपने पति और मित्रों के साथ आधुनिकता पर बातें करती है। विवाह संस्था के कृत्रिम और खोखलेपन को स्वीकार करती है, उसने अपने पिता से मोर्चा लिया था और प्रेम विवाह किया था। वह अपने संबंधों को जोर से पकड़े हुए थी। वह लीक से हटने के पक्ष में है। परंतु अपनी संतान के लिए नहीं।''[1]

'एक कमजोर लड़की की कहानी' में एक ऐसी लड़की का चित्रण किया गया है, जो अपने पिता द्वारा लिए गए निर्णयों से पीड़ित है। उसके जीवन के सभी अहम फैसले उसके पिता लेते हैं और वह चाहकर भी अपना विरोध नहीं दर्शा पाती। वह कोई भी निर्णय लेने में असमर्थता महसूस करती है। क्योंकि पिता के शब्दों के आगे वह कुछ नहीं बोल पाती। रूप का स्कूल उसके पिता छुड़वा देते हैं और घर पर पढ़ाई शुरू की जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि रूप की सौतेली माँ सारा घर का काम उस पर सौंप देती है। ''धीरे- धीरे घर का सारा काम एक के बाद एक तारादेवी के कन्धों से सरकर रूप पर आता गया और वह भी बिना विरोध किए चूपचाप सब कुछ ओढ़ती चली गई। चन्द दिनों में ही वह विद्यार्थियों से गृहस्थिन बन गई।''[2] रूप को उसकी मर्जी के खिलाफ उसके मामा के घर भेज दिया जाता है। वहाँ रूप, ललीत नाम के लड़के से प्रेम कर बैठती है। परंतु उसका विवाह ललीत से नहीं हो पाता। क्योंकि रूप के पिता उसका विवाह एक वकील से तय कर देते हैं। इस प्रकार रूप अपनी जिंदगी के हर एक अहम मोड़ पर प्रताड़ित होती रही है। डॉ. रघुवर दयाल वार्ष्णेय अपनी पुस्तक 'हिन्दी कहानी बदलते प्रतिमान' में लिखते हैं - '''एक कमजोर लड़की की कहानी' उस असहाय दुर्बल लड़की की कहानी है, जिसका विवाह प्रेमी के अतिरिक्त किसी अन्य से कर दिया जाता है।''[3] रूप इकलौती बेटी होते हुए भी अपने पिता के घर में सुख से वंचित रह जाती है। अपने जीवन के प्रति स्वयं के निर्णय न ले पाने की पीड़ा उसमें विद्यमान रहती है।

'सयानी बूआ' नामक कहानी में एक ऐसी पाँच वर्षीय लड़की की पीड़ा का चित्रण किया गया है, जो माँ के व्यवस्था को लेकर किए गए व्यवहार से आतंकित है। उसकी माँ अर्थात सयानी बूआ घर

1. डॉ. कृष्णा रैणा - हिन्दी कथा साहित्य विविध संदर्भ, पृष्ठ. 38

2. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 43

3. डॉ. रघुवर दयाल वाष्णेय - हिन्दी कहानी बदलते प्रतिमान, पृष्ठ. 201

में व्यवस्था की इतनी कायल है कि उसने अपनी छोटी-सी बच्ची का सारा बचपन ही बर्बाद कर दिया है। यही नहीं सारे परिवार पर वह हावी हो चुकी हैं- ''पर मैंने देखा कि परिवार के सभी लोगों पर एक विचित्र आतंक- सा छाया हुआ है- सब पर मानो बुआजी का व्यक्तित्व हावी है। सारा काम वहाँ इतनी व्यवस्था से होता, जैसे सब मशीने हो, जो कायदे में बँधी, बिना रूकावट अपना काम किया करती।''[1] माँ के ऐसे कठोर नियंत्रण में अन्नू को सुबह पाँच बजे ही उठना पड़ता है। सब काम समयनुसार और खाना-पीना, ओढ़ना-पहनना सब कुछ बूआ के अनुसार। माँ के ऐसे व्यवहार से अन्नू पर इसका बहुत बुरा असर पड़ता है, जो इस कथन से सिद्ध होता है - ''सबसे अधिक तरस आता था अन्नू पर। वह इस नन्ही-सी उमर में ही प्रौढ़ हो गयी थी। न बच्चों का सा उल्लास न कोई चहचहाहट। एक अज्ञात भय से वह घिरी रहती थी।''[2] अन्नू को जहाँ माँ का लाड़-प्यार मिलना चाहिए था, वहाँ उसे भय, समय की पाबंदी, सुव्यवस्था का चोला पहनने को मिला। यह सही है कि बच्चों में अच्छे संस्कार के लिए उन्हें सुव्यवस्था का ज्ञान और समय का पाबंद होना आवश्यक है। परंतु यह सब करते समय उन पर किसी तरह का दबाव नहीं आना चाहिए और न ही उनका बचपन खोना चाहिए।

'कील और कसक' दांपत्य जीवन पर लिखी गई एक अलग किस्म की कहानी है। रानी का विवाह कैलाश नाम के व्यक्ति से होता है, जो कि दिखने में थोड़ा कुरूप है। रानी के मन में अपनी सुहागरात के बहुत से सपने हैं। जो कि एक नारी सुलभ भावना है - ''औरतों के बीच वह घिरी बैठी थी, पर मन उसका इन सारे कोलाहल को पार कर दोपहर की उबा देने वाली इस नीरस लम्बी घडियों को पीछे छोड़ रात के उस मदिर पहर की ओर दौड़-दोड़ कर जाता था, जब कोई बड़े दुलार से उसका घूँघट हटाकर, अपने रोम-रोम को आँख बनाकर उसके रूप को निहारेगा और प्रशंसा के पुल बाँधकर दो अपरिचित ह्रदयों की दूरी के अस्तित्व को ही मिटा देगा। यह कल्पना यहाँ बैठे-बैठे भी उसके सारे शरीर में दौड़ जाती। उसको लगता उसका अंग- अंग जैसे बेकाबू हुआ जा रहा है।''[3] परंतु रानी के इन सभी सपनों पर

1. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 67

2. वही, पृष्ठ. 67

3. वही, पृष्ठ. 116

सुहागरात के समय पानी फिर जाता है। रानी का पति ग्यारह बजे तक कमरे नहीं आता।''इस विचित्र आदमी के साधुत्व ने रानी के आक्रोश को इस हद तक बढ़ा दिया था कि उसकी इच्छा हो रही थी कि वह रो ले, पर तभी किसी ने कमरे में प्रवेश किया। रानी की पलके झपक गई, इस आशा से कि जल्दी ही कोई हौले से आकर उसका घूँघट हटा देगा और फिर वह अपने लाजभरे चेहरे को छिपाने के लिए बेसुध-सी किसी के सीने का आश्रय ले लेगी। पर तभी एक रूखी कर्कश-सी ध्वनि से उसकी कल्पना के आवरण को बुरी तरह चीर डाला, ''इतनी देर जागने की कोई जरूरत नहीं थी, तुम्हे सो जाना चाहिए था। --और वह रानी के अस्तित्व को भूलकर सो गया। रानी को लगा, वह अपने पास सोये इस आदमी का मुँह नोंच लें, अपने बाल नोंच ले, फूट-फूटकर रो पड़े।''[1] अपनी अतृप्त यौन भावना से पीड़ित रानी अपने पति में बदलाव की प्रतीक्षा में अपना वैवाहिक जीवन बिताती है। परंतु उसके पति में कोई बदलाव नहीं आता। कैलाश न कभी उसके रूप की प्रशंसा करता, न कभी उसके बनाए खाने की। इस प्रशंसा की भूखी रानी पति के ऐसे व्यवहार से पीड़ित है - ''चौबीसों घंटे प्रेस की मशीनों के बीच काम करते- करते कैलाश स्वयं एक मशीन बन गया था, भावनाहीन, रसहीन उसे न रानी में दिलचस्पी थी, न घर में।''[2] कैलाश कभी रानी को कहीं घुमाने भी नहीं ले जाता। इस बीच रानी, कैलाश के मित्र शेखर की तरफ आकर्षित होती है, जिसका स्वभाव कैलाश से बिल्कुल भिन्न है। परंतु उसका भी विवाह होने के बाद रानी और दु:खी हो जाती है। पति से तो कभी उसे प्यार नहीं मिला। परंतु जब शेखर का भी विवाह हो जाता है तो उसकी पीड़ा और बढ़ जाती है। रानी की यह पीड़ा केवल उसके भावनाहीन पति के कारण ही है। प्रदिप लाड अपनी पुस्तक 'मन्नू भंडारी की कहानियों के प्रमुख पुरूष पात्र' में कैलाश के विषय में लिखते हैं - ''कैलाश निरंतर काम करते- करते स्वयं एक भावनाहीन मशीन बन गया है। वह हमेशा अर्थ प्राप्ति की उधेड़-बुन में रहता है। अपनी पत्नी की उपेक्षा करता है। परिणामस्वरुप उसकी पत्नी अन्य पुरूष की ओर आकर्षित होती है। इसके लिए कैलाश ही जिम्मेदार है।''[3] जिस औरत का पति उसे वैवाहिक सुख न दे सके, प्यार के दो मीठे बोल न बोले, ऐसे व्यक्ति की पत्नी को कितनी पीड़ा होती है, इस बात का पता इस कहानी द्वारा होता है।

---

1. मन्नू भंडारी -मैं हार गई, पृष्ठ. 117

2. वही, पृ. 120

3. प्रदीप लाड- मन्नू भंडारी की कहानियों के प्रमुख पुरुष पात्र, पृष्ठ. 124

'क्षय' कहानी में एक ऐसी स्त्री की पीड़ा का चित्रण हुआ है, जो परिवार में सबसे बड़ी होने के कारण परिवार के दायित्व का सारा जिम्मा उसी पर है। घर की जिम्मेदारी उठाते- उठाते वह बहुत अकेली हो जाती है। उसे अपना जीवन नीरस लगने लगता है। घर में क्षय से ग्रस्त पिता और छोटे भाई की पढ़ाई का भार उठाते- उठाते कुंती टूट-सी जाती है और इसी भागदौड़ में खाँसते- खाँसते उसे ऐसे लगने लगता है कि वह स्वयं भी पापा की तरह क्षयग्रस्त हो गई है। यह सब करते- करते उसे अपने पिता ही बदले- बदले से लगते हैं - ''लेकिन पापा बदल गये हैं, बहुत बदल गये हैं। शायद यह बीमारी ही ऐसी होती है कि आदमी को बदलना पड़ता है। कुंती स्वयं महसूस करती है कि उसके जिस आदर्शवाद और दृढ़ आत्मविश्वास पर पापा कभी गर्व किया करते थे, उसी पर आज वे शायद दुख करते हैं।''[1] अपने परिवार के लिए कुंती सुबह से शाम तक जूझती रहती है - ''यह क्या सवेरा होने को आया ? तो वह आज बिल्कुल नहीं सो पायी ? कल सवेरे से ही फिर जुट जाना है ---बाजार, स्कूल, सावित्री, पापा की परिचर्या --- उसका सिर भारी होने लगा।''[2] काम के इस बोझ तले कुंती को अपने लिए समय ही नहीं मिल पाता - ''कुंती के लिए वही स्कूल, घर सावित्री --- सारा घर जैसे एक ढर्रे पर चल रहा था। मन जब बहुत ऊबता तो रात में ऊपर जाकर घण्टों वॉयलिन बजाती, यही तो उसके नीरस जीवन का एक आधार था।''[3] कुंती के मन में हमेशा अपने नीरस जीवन के प्रति बहुत से सवाल उठते हैं। वह सोचती है कि कब वह यह बोझ उसके कंधों से उतरेगा ? - ''उसके बराबर की और लड़कियाँ कितनी मौज करती हैं। घुमना-फिरना, सैर-सपाटे, हँसी-मजाक --- उसके जीवन में तो यह सब दूर-दूर तक भी नहीं है।---क्या कभी भी नहीं होगा ? क्या उसका सारा जीवन यों ही निकल जाएगा ? जितना रूपया वह कमाती है, उसमें कितने ढाढ क्या होता है ? मौज क्या होती है ? पापा क्या अब कभी अच्छे नहीं होंगे ? ------ कितने दिन तक वे इस तरह पड़े रहेंगे ? ----टुन्नी होता तो वह कल ही उसके साथ सिनेमा जाती। कब टुन्नी होता तो वह कल ही उसके साथ सिनेमां जाती। कब टुन्नी बड़ा होगा और उसका भार हल्का करेगा ? सच, अब तो वह ऊब गयी

1. मन्नू भंडारी - यही सच है, पृष्ठ. 10

2. वही, पृष्ठ. 13

3. वही, पृष्ठ. 17

है।''[1] कुंती का इस तरह ऊबना, उसकी पीड़ा का ही प्रतीक है। कुन्ती अनचाहे बोझ के कारण पीड़ित है। इस विषय में डॉ. गोरधन सिंह शेखावत लिखते हैं - ''मन्नू भंडारी की कहानी 'क्षय' में भी आर्थिक संकट से उत्पन्न घुटन का सांकेतिक चित्रण हुआ है। आदर्श को सामने रखकर चलनेवाली कुन्ती परिवार के लिए संघर्ष करती हुई टूट जाती है। घुटन उसे रोगग्रस्त बना देती है। परिवार की जिम्मेदारियाँ आर्थिक आवश्यकता एवं सिद्धातों की आदर्शवादिता अंत में घुटन पैदा कर देते हैं।''[2]

मन्नू भंडारी द्वारा लिखित 'बाँहों का घेरा' कहानी एक स्त्री को प्यार न मिलने की पीड़ा को चित्रित करती है। कम्मो जब पाँच वर्ष की थी, तभी उसकी माँ का देहांत हुआ था। उसके पिता दूसरा विवाह कर लेते हैं। सौतेली माँ कभी कम्मो को बाँहों में भरकर प्यार नहीं करती। कम्मो चाहती है कि वह उसकी सौतेली बहन की तरह माँ मुझे भी गोद में लेकर प्यार करे - ''कम्मो के अबोध मन में बड़ी लालसा उठती कि माँ ऐसे ही उसे भी प्यार करे। वह सकुचाती-सी माँ के पास जा खड़ी होती। माँ कभी प्यार से उसके गाल पर हल्की-सी चपत लगा देती या बाल सहला देती- बस। पिताजी आते तो वे भी टुन्नी को ही प्यार करते। सीने से लगाकर उसे कोई प्यार नहीं करता था।''[3] कम्मो जब बड़ी होती है, तो वह शैलन नाम के लड़के से प्रेम करती है। उसे आशा है, कि शैलेन ही शायद उसे बाँहों में भरकर प्यार करे, जिसकी उसे चाह है। परंतु उसकी यह इच्छा शैलेन भी पूरी नहीं करता - ''पर वह अनुभूति आज भी ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। कच्चे मन में उठी हुई वे कामनाएँ अतृप्त रहकर आज भी उतनी ही बनी हुई हैं। लाख प्रयत्न करके भी वह उन्हें दबा नहीं पाती वे ही निरंतर उसे दबाती रहती हैं, और वह है कि बड़ी असहायसी, बेबस-सी टीसती रहती है, कराहती रहती है।''[4]

कम्मो का विवाह मित्तल नाम के व्यक्ति से होता है, जो एक बड़ा व्यापारी है। कम्मो अपनी सुहागरात को लेकर बहुत से स्वप्न देख डालती है। उसे विश्वास है कि बरसो की उसकी यह कामना,

1. मन्नू भंडारी - यही सच है, पृष्ठ. 18
2. डॉ. गोरधन सिंह शेखावत - नयी कहानी उपलब्धि और सीमाएँ, पृष्ठ. 279
3. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 98
4. वही, पृष्ठ. 99

कि कोई उसे बाँहों में लेकर प्यार करे, अब जरूर पूरी होगी। परंतु इस बार भी कम्मो की यह कामना पूरी नहीं होती, जबकि बाकी सब कुछ होता है, जो सुहागरात को होना चाहिए। बचपन से कम्मो की यह चाह है कि कोई उसे बाँहों में लेकर प्यार करे। परंतु विवाह होने पर भी उसकी यह मनोकामना पूरी नहीं होती। उसकी यह पीड़ा कोई नहीं समझ पाता। अंत में कम्मो की यह कामना उसका पुत्र शोन उसे बाँहों में पकड़कर यह इच्छा पूर्ण करता है।

'रानी माँ का चबूतरा' में गुलाबी एक ऐसी पीड़ित स्त्री है, जिसे उसके पति ने छोड़ दिया है। गुलाबी अपने दो बच्चों को मेहनत-मजदूरी करके पालती है।

शोषित और पीड़ित नारियों की अन्य कहानियाँ हैं - 'अकेली', 'एक बार और', 'बंद दराजो का साथ', 'नई नौकरी' आदि।

4.1.3 उपेक्षित नारी :-

उपेक्षित नारी, वह नारी होती है, जिसका तिरस्कार किया जाए अथवा उसे अस्तित्वहीन समझा जाए, उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाए। उपेक्षित नारी के साथ एक बेजान वस्तु के समान व्यवहार किया जाता है। कोई भी नारी यह बर्दाश नहीं कर सकती कि उसे उपेक्षित रखा जाए। वह अपने अस्तित्व के लिए कुछ भी कर सकती है। मन्नू भंडारी ने अपनी 'कील और कसक' नामक कहानी में रानी के माध्यम से उपेक्षित नारी का सशक्त चित्रण किया जाता है। रानी का विवाह कैलाश नाम के व्यक्ति से होता है, जो दिखने में अधिक सुंदर नहीं है। रंग काला है और मुँह पर चेचक के दाग हैं। विवाह के पश्चात रानी अपने पति से नारी सुलभ भावनाओं की अपेक्षा रखती है। परंतु सुहागरात को ही उनकी सारी अपेक्षाओं पर पानी फिरता दिखता है। जब कैलाश रात को रानी की तरफ पीठ करके सो जाता है। रानी के मन में उमड़ती सभी उमंगे वहाँ अपना दम तोड़ देती है। जैसे- जैसे दिन बितते हैं, कैलाश का स्वभाव ज्यों का त्यों रहता है। कैलाश हर समय अपने काम में व्यस्त रहता है। उसे रानी से दो बातें करने का भी समय नहीं। रानी की अतृप्त यौन भावनाएँ अतृप्त ही रहती है। रानी के कहने पर कैलाश उसे घुमाने नहीं ले जाता। रानी के बनाए खाने की प्रशंसा भी नहीं करता। हर स्त्री चाहती है कि पति उसके रूप की उसके द्वारा बनाए गए खाने की प्रशंसा करे। परंतु रानी की यह इच्छा भी पूरी नहीं होती। रानी को पैर में चोट लग जाती है। कैलाश उसे दवा-दारु करने के बजाय वही पर उसपर बरस पड़ता है। इससे उसका दर्द और

भी बढ़ जाता है। रानी एक ऐसी औरत है, जो अपने पति द्वारा उपेक्षित है। वह विवाहित होते हुए भी कुँवारी ही है। क्योंकि उसकी यौन सुलभ भावनाएँ अतृप्त ही रह जाती है। मन्नू भंडारी ने 'कील और कसक' कहानी में एक उपेक्षित औरत की संवेदना को बड़े ही सजीव ढंग से चित्रित किया है। रानी की अतृप्त यौन भावना के विषय में डॉ. श्रीराम महाजन अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी कहानीसाहित्य में काममूलक संवेदना ' में लिखते हैं - ''पति, पत्नी की काममूलक आवश्यकताओं को यथोचित रूप में नहीं समझ सकता है तो दांपत्य-संबंध की मधुरता उनके जीवन में नहीं आ सकती, यही इस कहानी से ध्वनित होता है। इस कहानी में दांपत्य संबंध के भीतर काम-मूलक पीड़ा की तीव्रता और विद्रोहात्मक प्रतिक्रिया तो हुई है। किंतु पति-पत्नी परंपरागत काम-विषयक नैतिकता के प्रभाव से ग्रस्त हैं और घुटन की स्थितियों से गुजरते हैं। दांपत्य संबंध को काममूलक पावित्र्य विषयक तनिक संदेह भी जीवन को कलह से भर देता है।''[1] अपने माँ-बाप का घर छोड़कर स्त्री जब अपने पति के घर आती है, तब वह पति से इतना प्यार चाहती है कि उसे माँ-बाप को छोड़ने का दु:ख न सताए। परंतु जब पति उसे उपेक्षित रखता है तो उसे जीवन की सबसे बड़ी कमी महसूस होती है।

'एक कमजोर लड़की की कहानी' की रूप भी एक उपेक्षित नारी है। क्योंकि उसके जीवन को लेकर किए गए सभी फैसले उससे पूछे बिना ही किए जाते हैं अर्थात उसके निर्णय को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता।

'अकेली' कहानी में सोमा बूआ पति द्वारा उपेक्षित होती है। सोमा बूआ का पति साल में एक महीने के लिए आता है तब भी उससे कोई बात नहीं करता। 'बाँहों का घेरा' में कम्मो भी एक उपेक्षित नारी के रूप में ही चित्रित हुई है। पति मित्तल अपने व्यापार में पूरी तरह व्यस्त है। पत्नी की जरूरतों को जानने के लिए उसके पास समय ही नहीं है। 'क्षय' कहानी की कुंती भी उपेक्षित नारी है।

4.1.4 विद्रोही नारी :-

विद्रोह तभी किया जाता है, जब परंपरा से आ रहे नियम व्यक्ति को बंधन लगने लगते

1. डॉ. श्रीराम महाजन - आधुनिक हिन्दी कहानी -साहित्य में काममूलक संवेदना, पृष्ठ. 127-128

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

हैं, या फिर उसमें व्यक्ति स्वातंत्र्य न मिल रहा हो। जब व्यक्ति घुटन, कुंठा महसूस करने लगता है तब वह विद्रोह कर बैठता है। स्त्री भी विद्रोह करने में कभी पीछे नहीं रही। ऐसी बहुत-सी स्त्रियों के उदाहरण हैं, जिन्होंने जूल्म, अत्याचार के खिलाफ विद्रोह किया है। मन्नू भंडारी की कुछ कहानियों के नारी पात्र विद्रोह करते हुए नजर आते हैं।

'ईसा के घर इंसान' नामक कहानी में एंजिला एक पादरी के अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करती है। जहाँ चर्च में फादर रेवरैण्ड जबरदस्ती लड़कियों को नन बनाते हैं और आत्मशुद्धि के नाम पर उन्हें अपनी वासना का शिकार बनाते हैं। परंतु जब एंजिला नाम की सुंदर युवती को जबरदस्ती चर्च में नन बनाने के लिए लाया जाता है, तो एंजिला फादर के इस कुकर्म का कड़ा विरोध करती है। उनके धर्म की आड़ में किए गए पाप को सबके सामने बताती है। उन्हें चुनौती देते हुए उनको यह पाप बंद करने के लिए मजबूर करती है। एंजिला के इस विद्रोह के कारण अन्य युवतियों को भी बल मिलता है और लूसी और जूली चर्च की दीवार फाँदकर भाग जाती है। इस तरह एंजिला द्वारा उठाया गया विद्रोह का पहला कदम अन्य युवतियों को आत्मबल देता है, ताकि वे भी अपने आपको इस जाल से मुक्त करा सके।

'दीवार बच्चें और बरसात' नामक कहानी में रानी बीवी भी अपने पति के खिलाफ विद्रोह करती है। रानी एक शिक्षित नारी है। इसी कारण वह एक स्कूल में नौकरी करना चाहती है। परंतु उसका पति इसकी आज्ञा नहीं देता। रानी बीवी अखबारों में भी समय-समय पर लिखती रहती है। इसीलिए कुछ देर के लिए घर से बाहर भी जाना पड़ता है। इसी कारण दोनों पति-पत्नी के बीच झगड़े होते रहते हैं।

एक दिन रात को रानी देर से घर आती है। इसीलिए उसका पति उस पर गलत आरोप लगाते हुए कहता है - ''निकल जा, मेरे घर से। जिन यार-दोस्तों में घूमती फिरे है, उन्हीं के घर जाकर बैठ''[1] पति के इस आरोप से रानी बीबी बौखला जाती है और रोज के झगड़े से तंग आकर अपने पति से कहती है - ''हम दोनों का साथ निभ न सके तो साथ रहने से क्या फायदा ?''[2] ऐसा कहकर वह घर छोड़कर चली जाती है। रानी बीवी अपने पति का घर छोड़कर विद्रोही नारी का प्रमाण देती है। इस कहानी

---

1. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 100

2. वही, पृष्ठ. 101

के विषय में उर्मिला गुप्त अपनी पुस्तक 'स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ' में लिखती है - "'दीवार बच्चें और बरसात' में नारी को घर, परिवार और परंपराओ से ऊँचा उठाकर स्वतंत्र कर्तव्यों से संलग्न दिखाया गया है।"[1]

'बंद दराजों का साथ' कहानी में पति-पत्नी के लम्बे दांपत्य जीवन को टूटते हुए चित्रित किया है। मंजरी और विपिन दोनों पति-पत्नी हैं। उनका एक बेटा है आसित। दोनों का वैवाहिक जीवन सुखमय बीत रहा है। परंतु एक दिन मंजरी को विपिन के मेज की दराज में एक स्त्री और बच्ची की तसवीर मिलती है। मंजरी यह सोचकर बहुत दुखी है कि विपिन इतने दिनों तक उसे धोखा देता रहा। उसके जीवन में कोई और स्त्री भी है। इस बात का पता चलने पर वह चूपचाप सब कुछ सहन नहीं करती अपितु वह अपने बेटे का छात्रावास में डालती है और स्वयं पति के साथ न रहने का निर्णय लेते हुए विपिन से अलग हो जाती है। वह पति के व्यभिचार को सहन नहीं करती। इसीलिए मंजरी एक विद्रोही नारी का रूप लेती है। इस विषय में डॉ. विजया वारद अपनी पुस्तक 'साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ' में लिखती हैं - "विवाह पूर्व प्रेम चाहे पुरूष का हो या स्त्री किस प्रकार की प्रतिक्रिया देती है, इसका जीवंत चित्रण इस कहानी की विशेषता है।"[2] मन्नू जी की अन्य कहानियाँ, जिनमें विद्रोही नारी का चित्रण गया है, वे हैं - 'कील और कसक', 'त्रिशंकु' और 'रानी माँ का चबूतरा' आदि।

4. 1.5 शिक्षित नारी :-

आज जीवन में शिक्षा को जितना महत्त्व प्राप्त हो चुका है, शायद ही किसी और को प्राप्त हो। जन्म लेने वाला प्रत्येक मनुष्य शिक्षा का अधिकार रखता है, चाहे वह पुरूष हो या स्त्री। स्त्री ने शिक्षा अधिकार का फायदा उठाते हुए शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में तरक्की की है।

शिक्षा ही मनुष्य का जीवन बदल डालती है। शिक्षा के कारण व्यक्ति अपने अलग विचार रख सकता है और शिक्षा ही मनुष्य को एक अलग स्थान देती है। शिक्षा के ही कारण व्यक्ति अपने पैरो पर खड़ा रह सकता है। शिक्षा के इतने वर्चस्व के कारण ही साहित्य में भी अधिकतर शिक्षित पात्रों का ही चित्रण किया जाता है। शिक्षित पात्रों के चित्रण के पीछे लेखक का कोई न कोई उद्देश्य जरूर होता है।

1. उर्मिला गुप्त -स्वातंत्र्योत्तर कथा -लेखिकाएँ , पृष्ठ. 54
2. डॉ. विजया वारद - साठोत्तर हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ , पृष्ठ. 54

मन्नू भंडारी की कहानियों में बहुत-से नारी पात्र शिक्षित चित्रित किए गए हैं।

'सजा' नामक कहानी की मुख्य पात्र आशा स्कूली शिक्षा लेती एक किशोर वयीन लड़की है। उसके पिता को निर्दोष होते हुए मुकदमे का फैसला होने तक जेल में दिन बिताने पढते हैं। इस बीच आशा के परिवार की हालत बिगड़ती जाती है। परंतु आशा ऐसी हालत में भी बड़ी समझदारी और सहनशीलता से काम लेती है। उसे बड़ी कठिन परिस्थितियों में दँसवी कक्षा की पढ़ाई करनी पढ़ती है। पैसों की तंगी के कारण आशा को अपनी चाची के पास रहना पड़ता है। उसकी चाची आशा को घर का सारा काम सौंप देती है। वहाँ आशा की कालेज की पढ़ाई नहीं हो पाती।

'त्रिशंकु' कहानी की तनू भी स्कूली शिक्षा प्राप्त करनेवाली लड़की है। तनू के माँ-पिताजी ने प्रेम- विवाह किया है और इसके लिए तनू की माँ को अपने पिताजी के विरोध का सामना करना पड़ा है। इस बात को उसकी माँ, तनू को बार-बार बताती रहती है। परंतु तनू जब पड़ोस के लड़के से प्रेम कर बैठती है तो उसकी माँ उसे डाँटती और फटकारती है।

मन्नू जी की अधिकतर कहानियों में कालेज से लेकर पीएच. डी. करनेवाली नारियों तक का चित्रण हुआ है। इनमें बहुत-सी नारियाँ नौकरी भी करती है।

'गीत का चुंबन' कहानी की कुनिका ने एम. ए. किया है। उसकी आवाज अच्छी होने के कारण एक अच्छी गायिका है। कुनिका की पहचान निखिल नाम के युवक से होती है, जो गीत लिखता है और कुनिका उसके गीत गाती है। दोनों की दोस्ती प्यार में बदल जाती है। कुनिका और निखिल में अलग-अलग विषयों पर चर्चा भी होती रहती है। कुनिका स्त्री-पुरुष संबंधों में मर्यादा को आवश्यक मानती है तो निखिल किसी मर्यादा को महत्त्व नहीं देता।

एक दिन आवेश में आकर निखिल कुनिका का चुंबन लेता है और कुनिका इस अनपेक्षित व्यवहार से क्रोध में आकर निखिल को चाँटा मार देती है। निखिल उसकी जिंदगी से हमेशा-हमेशा के लिए चला जाता है। कुनिका बहुत रोती है और सोचती है - "क्या लड़के और लड़कियों की मित्रता का अंत इसके अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकता !"[1] परंतु बाद में कुनिका अपने व्यवहार पर गुस्सा आता है। निखिल भी अपने किए पर शर्मींदा होकर पत्र द्वारा उससे माफी माँगता है।

'जीती बाजी का हार' में आशा, नलिनी और मुरला कालेज में पढ़नेवाली घनिष्ठ सहेलियाँ है। ये तीनों स्त्रियाँ होते हुए भी इनका व्यवहार स्त्रियों से एकदम अलग है। यह बात कहानी की इन पंक्तियों से सिद्ध होती है- ''पढ़ना, लिखना, और बहस करना इसके अतिरिक्त इन बुद्धिजीवी लड़कियों की रूचि और किसी में नहीं थी। साज-शृंगार की ओर से, जो इस उम्र की लड़कियों की रूचि का मुख्य विषय रहता है - ये तीनों कितनी उदासीन थी, इसका अनुमान उनके बिखरे बालों और कपड़ों से सहज ही लगाया जा सकता था।''[2] इन तीनों में विवाह के विषय में मन में कोई उमंगे भी नहीं है। तीनों ने शादी न करने का फैसला भी किया है। परंतु नलिनी को बी. ए. की परीक्षा दिए बिना ही और आशा को एम. ए. की परीक्षा देने के बाद विवाह करना पड़ता है। दोनों अपने गृहस्थ जीवन से सुखी हैं। मुरला विवाह नहीं करती। वह पीएच. डी. करने के उपरांत शिक्षा विभाग के ऊँचे पद पर नियुक्त होती है। वह आशा की प्यारी बेटी देखकर यह महसूस करती है कि वह मातृत्व भाव से वंचित रही। डॉ. विजया वारद ने इस कहानी के विषय में सही लिखा है कि - ''दैहिक आवश्यकता की पूर्ती तो किसी-न-किसी तरह की जा सकती है। परंतु मातृत्व की प्यास या अकेलेपन से मुक्ति किसी और माध्यम से पूर्ण नहीं की जा सकती।''[3]

'दो कलाकार' एक सशक्त कहानी है। चित्रा और अरूणा दोनों सहेलियाँ हैं और एक ही कलिज में पढ़ती हैं। चित्रा को चित्रकारी में रूचि है और अरुणा को समाज सेवा में। इस कहानी के द्वारा मन्नू जी ने इस बात का समर्थन किया है कि कला, कला के लिए नहीं अपितु कला जीवन के लिए है।

मन्नू भंडारी की अन्य कई कहानियों में शिक्षित नारी का चित्रण हुआ है। जैसे 'क्षय' कहानी की कुंती, 'तीसरा आदमी' की शकुन, 'आकाश के आइने में' की लेखा, 'नई नौकरी ' की रमा आदि।

---

1. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 29
2. वही, पृष्ठ. 33
3. डॉ. विजया वारद - साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ, पृष्ठ. 30

4.1.6 अनपढ़ नारी :-

नारियों का अनपढ़ होना आज देश, समाज और परिवार के लिए अत्यंत हानिप्रद है। स्वयं नारी अशिक्षित होने से उसका प्रभाव समाज की प्रत्येक इकाई पर पड़ता है। स्वयं नारी भी अनेक स्वर्ण अवसरों से वंचित हो जाती है। जिस देश में अनपढ़ नारियों की भरमार हो, वह देश कभी विकसित नहीं हो सकता। मन्नू भंडारी ने कुछेक कहानियों में ही अनपढ़ नारी का चित्रण किया है। ये अनपढ़ नारियाँ गांव में रहनेवाली हैं।

'रानी माँ का चबूतरा' कहानी की गुलाबी एक अनपढ़ स्त्री है, जो पति द्वारा छोड़ दी गई है। गुलाबी एक ऐसी अनपढ़ नारी है, जो अपने जीवन में बहुत-सी मुसीबतों से जूझती आई है।

'अकेली' की सोमा बूआ भी एक अनपढ़ नारी है, जो अकेलेपन की समस्या से दूर रहने का भरसक प्रयत्न करती है।

'कील और कसक' की रानी एक अनपढ़ नारी के साथ यौन भावना से अतृप्त नारी भी है। पति के उपेक्षित व्यवहार के कारण वह अन्य पुरूष की ओर आकर्षित होती है।

'नशा' कहानी की आनंदी भी एक अनपढ़ स्त्री ही है। पति के अत्याचार से त्रस्त आनंदी अपने पति से अटूट प्रेम करती है।

' शायद' कहानी की माला एक अनपढ़ स्त्री है। वह अपने पति की भावनाओं को समझने में असमर्थ है।

3.1.7 स्वाभिमानी नारी :-

स्वाभिमानी नारी वह नारी होती है, जो कभी अपने आत्मसम्मान को ठेस नहीं लगने देती। फिर चाहे कितनी भी विपरीत परिस्थितियाँ क्यों न हो। स्वाभिमान ही मनुष्य को शान से जीना सिखाता है। जब हम अपने स्वाभिमान की रक्षा नहीं कर पाते, तब हमारा जीवन व्यर्थ रह जाता है। मन्नू भंडारी की निम्नलिखित कहानियों में स्वाभिमानी नारी का चित्रण हुआ है।

'क्षय' कहानी की कुन्ती एक स्वाभिमानी नारी है। वह स्कूल में नौकरी करती है। उसके पिता क्षय ग्रस्त है। कुंती अपने छोटे भाई को पढ़ने के लिए इलाहबाद भेजती है। वहाँ उसके भाई को एक कक्षा पीछे बिठाया जाता है। कुंती के पिता चाहते है कि कुन्ती उसके भाई के स्कूल में सिफारिश करके उसकी कक्षा बढ़वा दे। परंतु कुंती ऐसा नहीं करती। उसे ऐसी बातों से चिढ़ है। इसीलिए वह सोचती है - ''कोई उसके पास इस तरह की सिफारिश लेकर आए तो ? उसका बस चले तो वह उसे स्कूल के फाटक से ही निकाल बाहर करे।''[1] इस बात से पता चलता है कि कुंती एक स्वाभिमानी नारी है।

'रानी माँ का चबूतरा' कहानी की मजदूरी करती हुई गुलाबी भी अपने स्वाभिमान को आँच नहीं आने देती। वह परित्यक्ता है। वह अकेली मेहनत करके अपने दो बच्चों को पालती है। एक दिन उसकी बेटी मेवा किसी की दी हुई चुड़ियाँ पहनकर आती है। गुलाबी को लगता है, उसने चोरी की है। इसीलिए उसे बहुत क्रोध आता है और वह मेवा को बहुत पीटती है। जब उसे पता चलता है कि किसी ने उसे वे चुड़िया दी है तो वह कहती है - ''दी है, तो क्यों दी है ? हम क्या भिखमंगे हैं, जो किसी का दिया पहनेंगे ? आज मेरे घर में कोई मूँछोवाला नहीं बैठा है, तो सब लोग भीख देने चले हैं। थू है उन पर ! बड़े आये हैं दया दिखाने वाले।''[2] गाँव के लोग उसके बेटे को 'शिशु-सुरक्षा केंद्र' में भर्ती करवाने के लिए चंदा देने की बात करते हैं तो वह कहती है - ''किसी के दान-पुन्न पर पलनेवाली नहीं है गुलाबी, थूकती है तुम्हारे चंदे पर।''[3] इस प्रकार गुलाबी में स्वाभिमान दृष्टिगोचर होता है।

'रानी माँ का चबूतरा' कहानी की रानी बीबी भी एक स्वाभिमानी नारी है।

3.1.8 नौकरी पेशा नारी :-

जहाँ नारियों ने स्वयं को शिक्षा क्षेत्र में अग्रसर रखा है, वहाँ स्वयं को नौकरी के क्षेत्र में भी पीछे नहीं रखा। आज हर क्षेत्र में नारी सक्रिय है।

नौकरी करके भी कभी-कभी स्त्री को पूर्ण स्वतंत्रता नहीं मिल पाती अथवा उसे आत्मसंतोष नहीं मिल पाता। मन्नू भंडारी की कहानियों में नौकरी पेशा नारी के जीवन को चित्रित किया

---

1. मन्नू भंडारी- यही सच है, पृष्ठ. 9
2. वही, पृष्ठ. 121
3. वही, पृष्ठ. 122

गया है।

'आकाश के आइने में' की लेखा नौकरी पेशा नारी है। लेखा कालेज में प्राध्यापिका है और पीएच. डी. के लिए अध्ययन भी कर रही है। नौकरी, घर और पीएच. डी. का अध्ययन करते- करते लेखा बहुत कमजोर हो जाती है। इसीलिए उसका पति दिनेश उसे हवा-पानी बदलने के लिए गांव भेजता है, ताकि उसे आराम मिल सके। परंतु वहाँ उसे आराम नहीं मिल पाता। उसका मन वहाँ घुटने लगता है। ससुराल में परिवार बड़ा है। वहाँ लेखा की सास, ननद, जेठ-जेठानी, उसके दो बच्चें, ससूर और दो देवर हैं। लेखा की सास हमेशा उसके सामने घर की आर्थिक स्थिति को लेकर रोने बैठ जाती है। वह घर की सारी जिम्मेदारी लेखा और दिनेश पर डालना चाहती है। लेखा की जेठानी उससे ईर्ष्या करती हुई, उसे ताने देती है। लेखा अपनी ननद और देवर का घुटन भरा जीवन और छोटी-सी उम्र में बड़ी महत्त्वकांक्षा को देखकर स्वयं लेखा भी बहुत दुखी होती है। लेखा शहर की आपा-धापी की जिंदगी से तंग आकर गाँव में कुछ आराम करने के लिए आती है। परंतु वहाँ का माहोल भी उसे शांतता प्रदान नहीं करता।

'नई नौकरी' की रमा कालेज में प्रोफेसर है। रमा के पति कुंदन को एक अच्छी कंपनी में नौकरी मिल जाती है। वहाँ कुंदन को अच्छा-खासा वेतन मिलता है। इसी कारण वह रमा को उसकी नौकरी छोड़ने पर मजबूर कर देता है। रमा को नये घर को सँवारने, सजाने में और कुंदन की कंपनी के अधिकारियों की खातिरदारी में अपना सारा समय बिताना पड़ता है। रमा पढ़ी-लिखी और अपने पैरो पर खड़ी होने के बावजूद भी उसे व्यक्ति स्वातंत्र्य नहीं मिल पाता। इस कहानी के विषय में प्रा. उमा लिखती हैं- ''नये जीवन मूल्य अर्थाजन की क्षमता प्राप्त होने पर ही कार्यान्वित हो सकते हैं। कमाने की दृष्टि से जब तक नारी स्वाधीन नहीं होती, तब तक वह अपने व्यक्तित्व की स्वतंत्रता को बनाए नहीं रख सकती। आर्थिक पराधीनता नारी की व्यक्तिगत सत्ता की सबसे बड़ी दुश्मन है।''[1] रमा को नौकरी छोड़ने पर व्यक्ति स्वातंत्र्य नहीं मिल पाता। उसका पति उसे चारदीवारी में रहने को मजबूर करता है।

'स्त्री सुबोधिनी' आत्मकथात्मक कहानी है। इस कहानी की नायिका 'मैं' अपनी दुख भरी कहानी सुनाती है। वह आयकर विभाग में नौकरी करनेवाली एक प्रौढ़ कुमारिका है, जो अपने बॉस

---

1. प्रा. उमा- मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिकता बोध, पृष्ठ. 99

शिन्दे के प्रेम जाल में फँस जाती है। शिंदे उससे प्यार का नाटक करता है और उसे अपनी वासना का शिकार बनाता है। परंतु कुछ सालों बाद उसे पता चलता है कि वह विवाहित है। शिंदे की असलियत का पता चलते ही 'मैं' बहुत दुखी होती है और अन्य स्त्रियों को किसी विवाहित व्यक्ति से प्रेम न करने की सलाह देती है। इस कहानी द्वारा पता चलता है कि कार्यालयों में नारियाँ कितनी असुरक्षित हैं। उनके साथ प्रेम का खेल खेला जाता है और उन्हें बर्बाद किया जाता है।

'क्षय' कहानी की कुन्ती भी नौकरी पेशा युवती है। वह स्कूल में अध्यापिका है। उसके घर में क्षय से पीड़ित पिता हैं और एक छोटा भाई भी है। इन दोनों की जिम्मेदारी कुन्ती पर ही है। कुन्ती एक ट्यूशन भी लेती है और घर का सारा खर्च चलाती है। पिता की बीमारी से वह बहुत परेशान रहती है। उनके इलाज में बहुत-सा पैसा खर्च हो चुका है। कुन्ती अपने इस जीवन से ऊब गई है। एक बार तो उसे लगता है कि पापा मर जाए। अपने नीरस जीवन से वह तंग आ जाती है। कुन्ती एक ऐसी नौकरीपेशा स्त्री है, जो अपने नीरस जीवन से छुटकारा पाना चाहती है।

'तीसरा आदमी' कहानी की शकुन नौकरी पेशा नारी है। वह विवाहित है। उसका पति सतीश भी नौकरी करता है। दोनों का जीवन सुखमय है। परंतु संतान के अभाव में दोनों में कुछ अजनबीपन पनप उठता है। इस कहानी के विषय में डॉ. श्रीराम महाजन अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में काममूलक संवेदना' में लिखते हैं - ''मन्नू भंडारी की 'तीसरा आदमी' कहानी में भी दाम्पत्य संबंध की टूटन और घुटन का कारण पति के मन का पत्नी के बारे में विवाह-बाह्य काम संबंध विषयक संदेह तथा अपने पुरूषत्व विषयक हीनतर ग्रंथि है। शकुन जैसी नौकरी पेशा नारी जो इतने दिनों तक निभाए दांपत्य जीवन में झट से पति के मन में संदेह का कारण बनती है।''[1]

'बन्द दराजों का साथ' की मंजरी किसी शिक्षा संस्था में अध्यापिका है। वह विवाहित है और उसका एक पुत्र भी है। एक दिन मंजरी को अपने पति विपिन की मेज की दराज में एक स्त्री और बच्ची की तसवीर मिलती है। उसे पता चलता है कि उसके पति के जीवन में उसके अलावा एक और स्त्री है। पति के इस व्यवहार से वह दुखी होती है। वह अपने बेटे असित को छात्रावास में भेजती है और स्वयं दो महीने की

1. श्रीराम महाजन- आधुनिक हिन्दी कहानी-साहित्य में काममूलक संवेदना, पृष्ठ. 129

छुट्टी लेकर दिल्ली छोड़ देती है। फिर बाद में वह वहीं रहती है। विपिन उस घर में नही रहता। मंजरी अकेलापन महसूस करती है। उसे अपना जीवन नीरस लगने लगता है। कुछ सालों बाद उसके जीवन में दिलीप नाम का व्यक्ति आता है। इसीलिए मंजरी के जीवन में थोड़ी-सी खुशी भी आती है। परंतु जब असित की फीस को लेकर दिलीप खर्चे की बात करता है तो मंजरी को लगता है कि असित दिलीप का बेटा नहीं है, इसीलिए उसने ऐसा कहा और वह बहुत निराश होती है। अपनी अधूरी जिंदगी का उसे बहुत अफसोस होता है। मंजरी सुख पाना चाहती है परंतु उसे सुख प्राप्त नहीं होता। हर जगह वह आहत होती है। मन्नू भंडारी की अन्य कहानियों में भी नौकरीपेशा नारी का चित्रण हुआ है, जैसे - 'अभिनेता' की रंजना, 'कमरे कमरा और कमरे' की नीलिमा, 'दरार भरने की दरार' में श्रुती और नंदिनी तथा 'जीती बाजी की हार' की मूरला आदि।

3.1.9 मजदूरी करनेवाली नारी :-

कई औरतों को मजदूरी करके अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करना पड़ता है। मन्नू भंडारी ने अपनी केवल एक ही कहानी में मजदूरी करनेवाली नारी का चित्रण किया है। वह कहानी है 'रानी माँ का चबूतरा'। इस कहानी की गुलाबी परित्यक्ता स्त्री है। उसके दो बच्चे भी है, जिन्हें वह मजदूरी करके पालती है। दिनभर मेहनत करके उसे दाल और सतू खाकर सोना पड़ता है। वह रात को भी मजदूरी करके अपनी बेटी के लिए चूड़ियाँ लाती है और अपने बच्चे को 'शिशु-सुरक्षा केंद्र' में भर्ती करवाती है। गुलाबी एक निडर स्त्री है। वह अकेले होते हुए भी गांव के सभी लोगों के तानों का जवाब देती है। वह एक ममतामयी माँ भी है जो अपने बच्चों के लिए दिन-भर मेहनत करती है। वह मजदूरी तो करती है। परंतु स्वाभिमान को उसने ताक पर नहीं रखा।

3.1.10धोखे की शिकार नारी :-

धोखा खाना यह किसी भी मनुष्य को दुख पहुँचाने वाली बातं है। चाहे वह पुरूष हो अथवा नारी। जिस व्यक्ति पर कोई विश्वास करे और वही उसे धोखा दे तो कोई बर्दाश नहीं कर पाता। नारी को भी धोखा देनेवाले व्यक्ति हमारे समाज में इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। नारी की सबसे बड़ी कमजोरी यही है कि वह किसी पर भी झट से विश्वास कर लेती है और इसी बात का फायदा लोगों द्वारा उठाया जाता है।

मन्नू भंडारी की मुख्यत: तीन कहानियों में धोखे की शिकार बनी नारी का चित्रण है। वे कहानियाँ हैं- 'अभिनेता', 'स्त्री-सुबोधिनी' और 'बंद दराजों का साथ'।

'अभिनेता' कहानी में रंजना नाम की प्रसिद्ध अभिनेत्री दिलीप नाम के व्यक्ति से धोखा खाती है। रंजना के जीवन में दिलीप प्यार बनकर आता है। दोनों के संबंध घनिष्ठ होते जाते हैं। एक दिन दिलीप रंजना से बारह हजार रूपये उधार लेता है और भाग जाता है। रंजना उसका बहुत दिनों तक इंतजार करती है और आखिर में उसके घर जाती है। वहाँ उसे पता चलता है कि दिलीप की एक पत्नी और बच्ची भी है, जो विदेश में है। दिलीप ने वहाँ भी किसी व्यक्ति से रूपये उधार लेकर उन्हें लौटाए नहीं है। दिलीप के असली रूप को जानकर रंजना उसे ही सबसे बड़ा अभिनेता मानती है।

'स्त्री-सुबोधिनी' एक औरत की व्यथा की कहानी है। कहानी की नायिका 'मैं' है, क्योंकि यह आत्मकथात्मक कहानी है। 'मैं' एक प्रौढ कुमारिका है। वह अपने बॉस शिंदे से प्रेम करती है। और अंत में उससे धोखा खाती है। इस कहानी के विषय में डॉ. घनश्याम भुतड़ा ने अपनी पुस्तक 'समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी के विविध रूप' में धोखा खाई स्त्री के बारे में सही लिखा है कि ''भारतीय लड़कियाँ प्यार के चक्कर में ऊँचे सम्मानित पद का काम करती हुई भी धोखा खा जाती है। पत्नी बनने की ललक, नारी को शिंदे की बाहों में पहुँचा देती है। शिन्दे से धोखा खाकर वह अपने खंडित जीवन फिर से संवारती है।''[1]

'बन्द दराजों का साथ' की मंजरी अपने पति से ही धोखा खाती है। मंजरी और विपिन का सुखद दांपत्य जीवन है। उनका एक बेटा भी है। परंतु एक दिन टेबल की दराज से मिली एक औरत और बच्ची की तसवीर से उसे पता चलता है कि विपिन की जिंदगी में कोई दुसरी स्त्री भी है। मंजरी को विपिन अजनबी लगने लगता है। वह घर में स्वयं को अकेली महसूस करने लगती है। मंजरी और विपिन के संबंध किस तरह बिगड़ते चले गए यह कहानी की इन पंक्तियों से पता चलता है - ''क्योंकि दराज में विपिन का केवल अतीत ही नहीं था, वर्तमान भी था और उसमें भविष्य की योजनाएँ भी । वह जैसे- जैसे विपिन के व्यक्तिगत जीवन के निकट हो जा रही थी, अनजाने और अनचाहे ही विपिन से दूर होती जा रही थी ! धीरे-धीरे मनों की यह दूरी शरीरों में भी फैलती चली गई थी। और वे अनायास ही एक दूसरे के लिए

1. डॉ. घनश्याम भुतड़ा- समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी के विविध रूप, पृष्ठ. 107

निहायत अपरिचित हो गये। फिर उनके हिसाब अलग रहने लगे, सम्पर्क और संबंध अलग हुए।''[1] मंजरी पति द्वारा दिए गए धोखे के कारण अलग रहने का फैसला करती है। इस कहानी के विषय में सरिता कुमार अपनी पुस्तक 'महिला कथाकारों की रचनाओ में प्रेम का स्वरुप-विकास' में लिखती हैं - ''कहानीकार ने अपनी कहानी 'बन्द दराजो का साथ' में नारी के खंडित व्यक्तित्व को उजागर किया है और प्रेम के उलझे स्वरुप का निरूपण किया है। इस कहानी में मंजरी और विपिन का, मंजरी और दिलीप का साथ बन्द दराजों का साथ है। इन बंद दराजों में मंजरी अपने जीवन की सही दिशा खोजने की कोशिश करती है और इस कोशिश में वह टूट जाती है।''[2] मंजरी अपने पति से धोखा खाकर अकेली रहना चाहती है। परंतु अकेली रह नहीं पाती। उसके जीवन में दिलीप आता है। किंतु वह उसके बेटे असित के स्कूल के खर्चे के लिए कड़वी बात बोलता है। मंजरी समझ जाती है कि दिलीप भी उसका नहीं हो सकता।

4.1.11 संघर्षशील नारी :-

मन्नू भंडारी ने अपनी कुछ कहानियों में संर्घषशील नारी का चित्रण भी किया है। 'रानी माँ का चबूतरा' की गुलाबी एक संघर्षशील नारी है। वह अकेली अपने दो बच्चों को पालने के लिए कड़ी मेहनत करती है। गुलाबी के संघर्ष के विषय में हेतु भारद्वाज ने अपनी पुस्तक 'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिमा' में लिखते हैं - ''मन्नू भंडारी की 'रानी माँ का चबूतरा' कहानी की गुलाबी की संघर्षशील प्रतिमा, साहस तथा कर्ममंडित है। उसे किसी सहारे की आवश्यकता नहीं क्योंकि उसे अपने बाहुबल पर विश्वास है तथा वह अपनी निर्माता स्वयं है।''[3] गुलाबी अकेली होते हुए भी किसी की मदद नहीं माँगती। यहाँ तक कि वह अपनी बेटी को दूसरों की दी चूड़ीयाँ भी पहनने नही देती।

'क्षय' कहानी की कुन्ती भी एक संघर्षशील नारी है। वह अपने घर में सबसे बड़ी है। इसी कारण घर की सारी जिम्मेदारी उसी के कंधों पर है उसके घर में क्षय के रोगी पिता और इलाहबाद में पढ़ता छोटा भाई है। वह सुबह स्कूल में पढ़ाती है और शाम को किसी लड़की को घर जाकर पढ़ाती है।

---

1. मन्नू भंडारी-एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 23
2. सरिता कुमार-महिला कथाकारों के कथा साहित्य में प्रेम का स्वरुप विकास, पृष्ठ. 113
3. हेतू भारद्वाज- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में मानव प्रतिमा, पृष्ठ. 177

पापा की बीमारी और घर खर्च के लिए उसे जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है। 'सजा' कहानी की आशा भी संघर्षशील नारी है।

3.1.11दूसरों पर हावी होने वाली नारी :-

मन्नू भंडारी की एकमात्र कहानी 'सयानी बूआ' में दूसरों पर हावी होनेवाली नारी का चित्रण हुआ है। सयानी बूआ अपने परिवारवालों पर पूरी तरह से छाई रहती है। वह व्यवस्था की इतनी कायल है कि लापरवाही से किया छोटा-सा छोटा काम भी बर्दाश नहीं करती। वह छोटी से छोटी वस्तु को संभाले रखती है। हर काम घड़ी की सूइयों के आधार पर किया जाता है। सयानी बूआ का व्यवस्था के प्रति कायल होना कहानी की इन पंक्तियों से सिद्ध होता है -''अपना सामान सँभालकर रखने में जितनी पटु थीं, और व्यवस्था की जितनी कायल थी, उसे देखकर चकित हो जाना पड़ता था।''[1] परंतु अपने इस व्यवहार में वह अपनी पाँच वर्षीय बेटी पर बहुत अत्याचार करती है। परिवार में सब पर बूआ का व्यक्तित्व हावी रहता है। यहाँ तक कि उनके पति पर भी। उसकी बेटी को सुबह पाँच बजे उठना पड़ता है। उसे वही कपड़े पहने पड़ते जो बूआ निकाल कर दे। इसी कारण वह छोटी-सी बच्ची अपना बचपन खो देती है। हमेशा अपनी माँ से डरी-डरी रहती है। इस बीच वह बीमार हो जाती है। इसीलिए डाक्टर उसे किसी पहाडी प्रदेश भेजने को कहते हैं। अन्नू अपने पिता के साथ वहाँ जाती है, अपनी माँ की ढेर सारी हिदायतों के साथ। एक दिन अन्नू के पिता महँगे दो प्याले टूटने पर बूआ को इस तरह रहस्यात्मक पत्र लिखते हैं कि बूआ को लगता है कि अन्नू को कुछ हो गया। परंतु सही बात पता चलने पर उन्हें अपने व्यवहार का और गलती का एहसास होता है। स्पष्ट है कि इस कहानी की सयानी बूआ दूसरों पर हावी होनेवाली नारी के रूप में चित्रित की गई है।

3.2 रिश्तों के आधार पर नारी संवेदना के विविध रूप :-

नारी जो जन्म से लेकर मृत्यु तक जितने भूमिकाएँ निभाती है, उनमें वह खरा उतरने की पूरी- पूरी कोशिश करती है। प्रत्येक नारी अपनी कोई न कोई भूमिका जरूर निभाती है। अपनी भूमिका निभाने में कभी-कभी वह स्वयं का अस्तित्व भी भूल जाती है। डॉ. घनश्याम भुतड़ा ने अपनी पुस्तक -

---

1. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 66

'समकालीन हिन्दी कहानियों में नारी के विविध रूप' की भूमिका में लिखा है कि "उसका कोई निरपेक्ष अस्तित्व नहीं है, वह बेटी, माँ, पत्नी, प्रेयसी जो भी है उसी संबंध में जीवित रहने को अभ्यस्त है।"[1] नारी की विविध भूमिकाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका अर्थात रूप हैं माँ का रूप। यह रूप त्याग और प्रेम को साथ लेकर चलता है। इसीलिए यहाँ प्रथमत: विवेच्य कहानियों में चित्रित माँ के रूप का विवेचन प्रस्तुत किया है।

1.2.1 माँ के रूप में :-

नारी के अन्य रूपों में जो सबसे महत्त्वपूर्ण रूप है वह है माँ का रूप। प्रत्येक स्त्री इस रूप को पाने के लिए लालयित रहती है। समाज में माँ बनने से ही स्त्री जन्म सार्थक माना जाता है। माँ के रूप द्वारा ही मनुष्य जाति का निर्माण हो पाया है। माँ ही प्रत्येक जन्म लिये बच्चे की पाठशाला होती है। वहाँ बच्चा बोलना, खाना, पीना तथा सुनना माँ द्वारा ही सीखता है। माँ भी अपने बच्चे के बुरे से बुरे कर्म को माफ करके उसे गले लगाए रहती है। उसके लिए वह अपनी जान की भी परवाह नहीं करती। इसीलिए माँ के रूप को इतना ऊँचा स्थान प्राप्त है।

मन्नू भंडारी की बहुत सी कहानियों में माँ के रूप का चित्रण हुआ है। इन कहानियों में माँ का रूप भी अलग- अलग विशेषताओं द्वारा उजागर हुआ है। किसी कहानी में माँ अपने जवान बेटे की मौत से दुखी और अकेली है, किसी में अपने बच्चों के लिए अकेली जूझती रहती है, तो किसी में त्रिशंकु की स्थिति से घिरी है। किसी में सौतेली माँ का रूप भी है। इस प्रकार माँ भी अलग-अलग विशेषताओं से युक्त चित्रित हुई है।

'सयानी बूआ' में अपनी बच्ची पर पूरी तरह से हावी होनेवाली माँ का चित्रण हुआ। वह व्यवस्था और घर संभालने की इतनी शौकीन है कि अनजाने में वह अपनी बेटी पर ही अत्याचार करने लगती है। उनकी बेटी अन्नू माँ से हमेशा डरी डरी रहती है। वह लाड में आकर माँ को बाहों में भी भर नहीं सकती। माँ के सामने किसी बात की जिद भी नहीं चलती। इसी कारण अन्नू अपना बचपन भोग नहीं पाती। छोटी-सी उम्र में ही वह प्रौढा जैसा व्यवहार करने लगती है।

1.

'एक कमजोर लड़की की कहानी' में रूप अपनी सौतेली माँ के व्यवहार से परेशान है। जब उसके पिता उसका स्कूल छुड़वाकर उसकी पढ़ाई घर पर शुरू करवा देते हैं तो उसकी सौतेली माँ उसे पढ़ने का समय ही नहीं देती। घर का सारा काम उसको सौंप देती है।

'बाहों का घेरा'नामक कहानी में कम्मो की बरसो की इच्छा कि कोई उसे बाहों में भरकर प्यार करे। उसके बेटे द्वारा पूरी तरह होती है। बेटे की बाहों में वह उस सुख को प्राप्त करती है, जिसके लिए इतने बरसों से लालयित थी।

'त्रिशंकु' की तनू अपने माँ-बाप की इकलौती बेटी है। उसके माँ-बाप ने प्रेम विवाह किया है। तनू की माँ को इस विवाह के लिए अपने पिता अर्थात तनू के नाना से विरोध करना पड़ा था। इस बात का किस्सा उसकी माँ हमेशा उसे सुनाती है। लेकिन जब तनू पड़ोस में रह रहे शेखर नाम के लड़के से प्रेम कर बैठती है, तो माँ उस पर बहुत नाराज होती है। कहानी की माँ समाज में अपनी प्रशंसा के लिए आधुनिकता का चोगा पहनती है। इसीलिए उन लड़कों से अपनी बेटी की दोस्ती करवाती है, जो उसे छेड़ते हैं। परंतु बेटी का प्रेमी उन्हीं में से एक होने के कारण उसे यह बात अच्छी नहीं लगती। कभी अपनी बेटी को इस संबंध के विषय में बहुत डाँटती है तो कभी बेटी के प्रेमी को बड़े प्यार से खाना खिलाती। इस कहानी की माँ दोहरे व्यक्तित्व से युक्त माँ है। इस कहानी के विषय में सरिता कुमार ने अपनी पुस्तक 'महिला कथाकारों के कथा-साहित्य में प्रेम का स्वरुप विकास' में लिखा है कि ''मन्नू भंडारी की 'त्रिशंकु' प्रेम के स्वरुप को, जो दो पीढ़ियो में अन्तर आ गया है, आयरनी के रूप में उजागर करती है। यह अन्तर माँ और बेटी के दृष्टिकोन में है।''[1]

'रानी माँ का चबूतरा' नामक कहानी में गुलाबी के माध्यम से ऐसी माँ का चित्रण किया गया है, जो पति के न होते हुए भी अकेली अपने बच्चों को पालती है। वह दिन भर मजदूरी करके रात को अपना और बच्चों का दाल सतू खाकर पेट भरती है। कई बार स्वयं भूखी रहकर बच्चों को खाना खिलाती है और बेटी द्वारा की गई अपनी परवाह को देखकर उसे गले भी लगाती है। अपनी बच्ची की चुड़ियाँ पहनने की इच्छा को पूरी करती है। इसके लिए उसे रात-दिन मेहनत करनी पड़ती है। गुलाबी एक मेहनतकश और ममतामयी माँ है। इस कहानी के विषय में डॉ. विजया वारद ने लिखा है कि ''इस कहानी

---

1. सरिता कुमार - महिला कथाकारों के कथा-साहित्य में प्रेम का स्वरुप -विकास, पृष्ठ. 117

का कथ्य इस देश के हजारो देहातों में संघर्ष करती हुई माँओं के साथ जुड़ा हुआ है। अपने मातृत्व का किसी भी प्रकार का प्रदर्शन न करते हुए अंधविश्वास से बाहर आकर ये माँएँ परिस्थिति के साथ जूझ रही हैं।''[1]

'बन्द दराजों के साथ' कहानी की मंजरी एक ऐसी माँ है जो अपने बेटे के विषय में अपने साथ रह रहे व्यक्ति के मन में परायापन देखती है तो अपने बेटे के लिए उस व्यक्ति को छोड़ने का निश्चय करती है।

मन्नू भंडारी की अन्य कहानियों में भी माँ के रूप में नारी पात्रों का चित्रण हुआ है। जैसे - 'सजा' कहानी में आशा की माँ, 'शायद' कहानी की माला, 'नशा' कहानी की आनंदी आदि।

1.2.2 पत्नी के रूप में :-

किसी की पत्नी होना भी, माँ होने से कम भाग्यशाली नहीं होता। पत्नी एक जीवनसाथी तो होती ही है साथ में उसे मित्र, शुभचिंतक, प्रेरणादायी सुख-दुख बाँटने वाली जैसे अनेक स्थान प्राप्त होते हैं। पत्नी बनने के बाद नारी जीवन की मुश्किल परिस्थितियों का मुकाबला अकेले न रहकर पति के साथ करती है। पति में वह उत्साह लाती है, निराशा दूर करती है, प्रोत्साहन देती है। पति को अपना सब कुछ समझने वाली नारी कभी-कभी स्वयं बहुत-सी उलझनों में फँस जाती है।

मन्नू भंडारी ने अपनी जितनी भी कहानियों में नारी को पत्नी के रूप में चित्रित किया है उनमें प्रत्येक नारी अलग परिस्थितियों में अपना गृहस्थ जीवन व्यतीत करती है।

'एक कमजोर लड़की कहानी' में रूप एक ऐसी पत्नी है, जो प्यार किसी और से करती है उसका विवाह किसी और से होता है। अपने पति के घर में आकर वह पिछला सब कुछ भूलकर पति की सेवा में लग जाती है। एक दिन उसका प्रेमी ललीत उसके घर आता है और कहता है - ''तुम मेरे साथ भाग चलो रूप। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है।''[1] यह सुनकर रूप हैरान हो जाती है। वह ललीत से कहती है ङ्र

---

1. डॉ. विजया वारद-साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ, पृष्ठ. 120

2. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 61

''यह तुम क्या कह रहे हो ? जानते हो, मेरी माँग में किसी और के सुहाग का सिन्दूर है- अग्नि को साक्षी देकर मैं उनकी हो चुकी हूँ।''[1] परंतु रूप ललीत के समझाने पर तैयार हो जाती है। ललीत रूप को रात को बारह बजे घर से निकलने को कहता है। रूप सभी तैयारी कर लेती है। जब उसके पति रात को आते हैं तो वह रूप की पढ़ी-लिखी भागी हुई औरत से तुलना करते हुए उसे श्रेष्ठ बताते है और पति की इस प्रशंसा से रूप घर से बाहर नहीं जा पाती। रूप अपने पति की खातिर गलत कदम नहीं उठाती। इसी कारण वह एक आदर्श पत्नी बन पाती है।

'दीवार बच्चे और बरसात' एक प्रतिकात्मक कहानी है, जिसमें बरसात से भीगी दीवार में निकली छोटी सी पौध उसे गिरा देती है, उसी तरह एक बोध रूपी स्त्री भी शिक्षा की बरसात में भीगी परंपरा की दीवार को तोड़ डालती है।

रानी एक पढ़ी-लिखी स्त्री है। पति से उसकी बिल्कुल नहीं बनती। उसका पति उसकी नौकरी और काम के सिलसिले में घर से बाहर रहने के सख्त खिलाफ है। इसीलिए दोनों में झगड़े होते रहते हैं। एक दिन जब रानी बीबी देर से घर पहुँचती है तो उसका पति उसे घर से निकाल देता है। वह भी यह कहते हुए कि, ''हम दोनों का साथ निभ न सके तो साथ रहने से क्या फायदा ?''[2] चली जाती है। रानी बीवी ऐसी पत्नी है जो पति के अत्याचार को सहन नहीं करना चाहती। उसका मानना है कि जब पति-पत्नी से साथ निभाया न जाए तो व्यर्थ में ही वैवाहिक जीवन को ढोना सही नहीं है। रानी बीवी परंपरा से हटनेवाली पत्नी के रूप में चित्रित हुई है।

'कील और कसक' कहानी में विवाहित होते हुए भी कुवांरी ही रहनेवाली पत्नी का चित्रण हुआ है। रानी कैलाश की पत्नी है। परंतु पत्नी होते हुए भी उसे पत्नी का सुख नहीं मिल पाता, क्योंकी उसकी यौन भावनाएँ अतृप्त ही रह जाती है। उसका पति कैलाश उसकी उपेक्षा करता है। इस उपेक्षित जीवन के कारण वह पड़ोस के शेखर नामक युवक की तरफ आकर्षित होती है।

'ऊँचाई' कहानी में ऐसी पत्नी का चित्रण किया गया है जो विवाहित होते हुए भी अपने

1. मन्नू भंडारी - मैं हार गई, पृष्ठ. 61
2. वही, पृष्ठ. 101

प्रेमी के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करती है। परंतु पति से छिपाती नहीं है। इस कृत्य को पाप भी नहीं समझती, क्योंकि वह इसे एक तरह से अपना कर्तव्य मानती है। शिवानी मानती है कि पर पुरूष के स्पर्श मात्र से ही नारी अपवित्र हो जाती है, ऐसी संकीर्णता उसमें नहीं है। शिवानी एक ऐसी पत्नी है जो प्रेमी से संबंध रखने के बाद भी अपने पति से ही अधिक प्रेम करती है। उसे बहुत ऊँचे स्थान पर मानती है। इस कहानी के विषय में डॉ. श्रीराम महाजन अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में काममूलक संवेदना' में लिखते हैं - ''इसमें आधुनिक नारी द्वारा अपने विवाह बाह्य कामसंबंध के औचित्य का ऐसा समर्थन किया गया है कि पति पुरूष पराजित हो गया है। परंपरा से पुरूष स्त्री पर लगभग हावी होता रहा है, किन्तु इस कहानी में आधुनिक स्त्री कामविषयक आचरण को लेकर पुरूष पर हावी हो गई है।''[1] शिवानी परंपरा को तोड़नेवाली पत्नी है।

'नई नौकरी' नामक कहानी में रमा एक ऐसी पत्नी है, जिसकी महत्त्वाकांक्षा पति द्वारा कुचली जाती है और उसे घर की चारदीवारी में रहकर संवारने, सजाने में ही सिमटकर रहना पड़ता है।

'बन्द दराजों का साथ' कहानी की मंजरी पति द्वारा रखे गए बाह्य संबंधों को कभी माफ नहीं करती। पति से दूर रहकर पति को वह सजा देने का प्रयत्न करती है। परंतु वह स्वयं भी टूटती जाती है। मन्नू भंडारी की अन्य कहानियों में जो नारी पात्र पत्नी के रूप में चित्रित हुए हैं, वे हैं - 'सयानी बूआ' कहानी की सयानी बूआ, 'अकेली' की सोमा बूआ, 'जीती बाजी की हार' की आशा और नलिनी, 'तीसरा आदमी' की शकुन 'नकली हीरे' की सरन और इंदु 'आकाश के आइने ' के लेखा, 'बाहों का घेरा' की कम्मो, और 'नशा' कहानी की आनंदी ।

1.2.3 बेटी के रूप में :-

नारी का सबसे पहला रूप बेटी का ही रूप है। क्योंकि किसी की बेटी के रूप में ही वह जन्म लेती है। स्त्री का बेटी होना कहीं उसके लिए वरदान सिद्ध होता है, तो कहीं अभिशाप। बेटी होते हुए भी उसके जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव आते हैं। इन्हीं उतार-चढावों का चित्रण मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में भी किया है।

1. डॉ. श्रीराम महाजन - आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में काममूलक संवेदना, पृष्ठ. 237

'एक कमजोर लड़की की कहानी' नारी के बेटी के रूप को कुचलती हुई कहानी है। पिता द्वारा उसके जीवन के महत्त्वपूर्ण फैसलों का उसकी इच्छा के खिलाफ निर्णय लिया जाता है। वह इन फैसलों का विरोध करने में असफल रहती है। उसकी असफलता का कारण है-पिता की मीठी- मीठी बातें और कुछ पिता के अनादर का प्रश्न। इसीलिए वह हमेशा चाहकर भी कुछ बोल नहीं पाती। पिता उसका स्कूल छुड़वा देते हैं, उसकी पढ़ाई घर पर शुरू की जाती है। उसे मामा के घर भेजा जाता है। वह जिस लड़के से प्रेम करती है, उससे उसकी शादी भी नहीं हो पाती। उसके पिता उसका विवाह किसी दूसरी जगह कर देते हैं। जिन्दगी के ये सभी फैसले उसके पिता उसकी इच्छा जाने बिना करते हैं और रूप टूटती चली जाती है। उसकी निर्णय अक्षमता को प्रा. उमा ने अपनी पुस्तक 'मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिकता बोध' में अपने शब्दों में इस प्रकार लिखा है -''एक कमजोर लड़की की कहानी', एक ऐसी लडकी कमजोर वृत्ति की परिचायक है जो किसी तरह का निर्णय नहीं कर सकती, निर्णय नहीं ले सकती और किसी भी तरह से अपने निर्णय को आचरण में नहीं उतार सकती।''[1] अपने पिता के कारण ही वह अपने निर्णय नहीं ले पाती।

'सयानी बूआ'कहानी में अन्नू के माध्यम से एक ऐसी बेटी का चित्रण किया गया है जो माँ के सुव्यवस्था के नियमों में इस तरह बाँधी जाती है कि एक दिन बीमार ही पड़ जाती है। उसकी माँ अनुशासन की इतनी कायल है कि अपनी बेटी को साधारण माँ की तरह लाड़ प्यार दे ही नहीं पाती। उसकी बेटी अनू अज्ञात भय से डरी रहती है। छोटी सी ही उम्र में वह प्रौढ़ लगने लगती है। माँ के सभी निर्देशों का उसे पालन करना पड़ता है।

'सजा' कहानी की आशा एक आदर्श बेटी के रूप में चित्रित की गई मिलती है। परिवार की विषम परिस्थितियों में भी वह बड़ी ही समझदारी से पेश आती है। उसके पिता पर चोरी का आरोप लगाया जाता है। पिता के पक्ष में फैसला होने तक तीन साल उन्हें जेल में काटने पड़ते है।इस बीच परिवार की हालत बिगड़ती जाती है। घर का मुखिया जेल में होने के कारण पैसों की तंगी होती है। आशा छोटे-से, बिना पंखेवाले कमरे में दसवीं कक्षा की पढ़ाई बिना कुछ कहे करती है और पास भी हो जाती है। घर की हालत वह जानती है, इसीलिए स्वयं को और अपने छोटे भाई को बहुत समझाती है। आशा का परिवार

1. प्रा. उमा- मन्नू भंडारी की कहानियों में आधुनिकता बोध, पृष्ठ. 33

बिखर जाता है। उसे और उसके छोटे भाई को अपनी चाची के पास रहना पड़ता है। उसकी चाची बहुत क्रुर है। वह आशा से सभी काम करवाती है और मन्नू को मारती है। तब भी आशा चूपचाप वहाँ रहती है। अपनी माँ को कुछ नहीं बताती। चाची के यहाँ रहते हुए भी उसे अपने पिता की परवाह रहती है। वह उन्हीं के बारे में सोचती कि ''तो पापा अकेले रह गये ?अम्मा और पप्पा की गोद भी छिन गयी जिसमें वे रो सकते थे। पप्पा का यह पता ? अलीगढ़ की गली-गली मुझे मालूम थी ? यह तो मजदूरों की बस्ती है। अँधेरी सीलन-भरी गलियाँ ---पास में बहते नाले। पप्पा का खाना कौन बनाता होगा ? उन्होंने तो कभी ऐसे काम नहीं किये।''[1]आशा बार-बार भगवान से प्रार्थना करती है कि उसके पिता बरी हो जाए। वे बरी हो भी जाते हैं, परंतु इस बीच उनका परिवार बहुत सी तकलीफें उठाता हैं।

'क्षय'कहानी की कुन्ती परिवार वहन करनेवाली बेटी के रूप में चित्रित की गई है। उसके पिता क्षय ग्रस्त हैं। भाई स्कूल में पढ़ता है। पिता की बीमारी का इलाज करते करते वह थक-सी जाती है। उसके जीवन में कोई उत्साह नहीं है। सुबह से लेकर शाम तक वह अपने परिवार के लिए मेहनत करती है। इस अनचाहे बोझ की जिंदगी से थककर एक दिन उसे लगता है कि वह स्वयं भी क्षय की रोगी है।

'संख्या के पार' की प्रमिला अपनी माँ के प्यार से वंचित रही है। उसने घर में सुना है कि उसकी माँ उसे जन्म देकर कही भाग गई है। इसीलिए वह माँ से घृणा करती है। प्रमिला अपने नाना-नानी के पास पलती है। एक दिन उसे पता चलता है कि माँ घर आई है, तो वह उससे मिलने को तरसने लगती है। उसकी माँ भी उससे मिलना चाहती है। वह सोचती है ''पहली बार अपनी माँ के दुख, माँ की मजबूरी ने मेरे मन को मथ दिया।''[2] उसे पता चलता है कि उसकी माँ भागी नहीं थी, बल्कि उसके ससुरालवालों ने उसे बेच दिया था। माँ के इस दुख को सुनकर प्रमिला माँ के और करीब चली जाती है। उसकी माँ एक दिन घर आती है और उसे गले लगाकर माँ के पिता ने दिया हुआ चेक वही छोड़कर प्रमिला के हाथ में पाँच रूपये का नोट देकर चली जाती है। इस कहानी में प्रमिला माँ के प्यार से बरसों से वंचित है। परंतु वह प्यार आखिर में उसे मिल ही जाता है।

---

1. मन्नू भंडारी - यही सच है, पृष्ठ. 68

2.

मन्नू भंडारी की अन्य कहानियों में भी नारी का बेटी के रूप का चित्रण हुआ है, जैसे- 'त्रिशंकु' की तनू, 'रानी माँ का चबूतरा' की मेवा आदि।

4.2.4 सखी के रूप में :-

प्रत्येक मनुष्य को एक मित्र की आवश्यकता होती है, चाहे वह पुरूष हो या नारी। मित्रता का ही एक ऐसा रिश्ता होता है, जिसमें एक-दूसरे से कोई अपेक्षा नहीं की जाती। मित्र के सामने ही जीवन की प्रत्येक घटना को खुली किताब के समान रखा जाता है। कठिन से कठिन परिस्थिति में मित्र ही मित्र का साथ देता है। इसीलिए आज जहाँ सभी रिश्ते-नाते मनुष्य के हाथों से टूटते जा रहे हैं, वहीं मित्रता अभी भी उसकी एक मूलभूत आवश्यकता के रूप में सशक्त रूप से खड़ी है।

मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में सखी के रूप को बहुत ही ऊपर उठाया है। नारी अपना सखी का रूप प्रामाणिकता से निभाती हुई चित्रित हुई है।

'जीती बाजी की हार' की आशा, नलिनी और मुरला को घनिष्ठ मित्र के रूप में चित्रित किया गया है। ये तीनों सहेलियाँ कालेज में पढ़ती हैं। तीनों की रूचि विचार एक जैसे हैं। तीनों ही अन्य युवतियों से अलग भी हैं, क्योंकि उन्हें साज, शृंगार में रूचि नहीं है, घर के दूसरे काम जैसे बुनाई, सिलाई में मन नहीं लगता। वे केवल अपनी पढ़ाई में ही डूबी रहती हैं। पढ़ाई के अलावा उन्हें कुछ नहीं सूझता। आपस में बात-चीत भी पढ़ाई के विषय पर ही की जाती है। शादी के विषय में भी तीनों का एकमत था। वे शादी को बर्बादी मानती है। परंतु फिर भी आशा और नलिनी का विवाह हो जाता है। परंतु मुरला विवाह नहीं करती। इस बात पर आशा से उसकी शर्त लगती है। मुरला आशा से कहती है कि वह शादी कभी नहीं करेगी और आशा कहती है - ''तू लाख बातें बघार यह शर्त बदकर कह सकती हूँ, कि शादी तुझे करनी ही पड़ेगी और तू करेगी भी।''[1] परंतु मुरला इस बात पर ध्यान नहीं देती। कुछ सालो बाद जब मुरला से आशा मिलती है तो शर्त की बात याद दिलाती है। मुरला शर्त जीत चूकी है। इसीलिए आशा उससे कुछ भी माँगने को कहती है। मुरला आशा से उसकी बेटी माँगती है। मुरला को आशा की बेटी बहुत पसंद आती है और वह भी मुरला से घुल-मिल जाती है। इसी कारण मुरला में भी वात्सल्य भाव उमड़ पड़ता है। इस कहानी के

---

1. मन्नू भंडारी -मैं हार गई, पृष्ठ. 39

माध्यम से लेखिका ने यह सूचित किया है कि जीवन में माँ बनना भी एक सुखद अनुभूति है। माँ बनने पर जीवन के अन्य महत्त्वपूर्ण स्थान भी फीके पड़ जाते हैं।

'दो कलाकार'नामक कहानी में चित्रा और अरुणा दोनों सहेलियाँ छात्रावास मे एकत्र रहती हैं। चित्रा, चित्रकार है और अरूणा समाज सेविका। दोनो एक-दूसरे के कामों में कोई न कोई नुक्स निकलाती रहती है। अरूणा चित्रा के काम को आडी तिरछी रेखाओं का काम मानती है और चित्रा अरूणा द्वारा आस-पास की बस्तियों के बच्चों को पढ़ाने के काम को बहुत बड़ी समाज सेविका कहकर चिढ़ाती है। लेकिन इतना होते हुए भी दोनों एक-दूसरे का बहुत ख्याल रखती है। उनकी मित्रता में कोई दरार नहीं आती। एक दिन चित्रा, एक मरी हुई औरत और उसके पास रोते बच्चों का चित्र बनाती है। यह दृश्य वह स्वयं की आँखों से देखती है और झट से चित्र बना डालती है। इसके बाद वह विदेश चली जाती है। उस चित्र के लिए उसे बहुत-से पुरस्कार मिलते है। उसकी बहुत प्रशंसा भी होती है। कुछ सालों बाद वह अपने देश वापस आती है। वहाँ उसके चित्रों की प्रदर्शनी लगती है। इसमें वह चित्र भी शामिल है, जिससे चित्रा की इतनी प्रसिद्धि प्राप्त होती है। वहाँ अरूणा भी अपने पति और दो बच्चों के साथ आती है। लड़का दस साल का है और लड़की आठ साल की। चित्रा उन्हें देखकर चौंक जाती है। वह अरूणा से पूछती भी है यह बच्चे किसके है? तो अरूणा बताती है मेरे ही हैं। परंतु चित्रा को विश्वास नहीं होता इसीलिए वह पूछती है - "सच-सच बता रूनी! ये प्यारे-प्यारे बच्चे किसके हैं ?"[1] तब अरूणा उस मरी हुई औरत और उसके दो बच्चों की तस्वीर पर दोनों बच्चों पर अुँगली रखकर कहती है - "ये ही वे दोनों बच्चे हैं।"[2] यह सुनकर चित्रा विस्मय से अरूणा की तरफ देखने लगती है। चित्रा उन असहाय बच्चों का केवल चित्र बनाकर अपना कर्तव्य पूर्ण करती है, परंतु अरूणा उन्हें अपना बनाकर समाज के प्रति अपना दायित्व निभाती है। इस कहानी में मन्नू भंडारी ने इस मत का समर्थन किया है कि कला कला के लिए न होकर कला जीवन के लिए होनी चाहिए।

मन्नू भंडारी की अन्य कहानियों में भी कुछ नारी पात्र सखी के रूप में चित्रित हुए हैं - जैसे 'दरार भरने की दरार' की श्रृती और नंदिनी,'आकाश के आइने' की लेखा और सुषमा आदि।

---

1. मन्नू भंडारी -मैं हार गई, पृष्ठ. 141
2. वही, पृष्ठ. 142

1.2.4 बहन के रूप में :-

मन्नू भंडारी ने अपी तीन कहानियों में नारी के बहन के रूप को चित्रित किया है। तीनों ही कहानियाँ सशक्त हैं। इन कहानियों में नारी के बहन के रूप को लेखिकाने श्रेष्ठता प्रदान करते हुए चित्रित किया है।

'नकली हीरे' की इंदू एक भूतपूर्व मंत्री की बेटी है। उसने घरवालों के खिलाफ एक प्रोफेसर से विवाह किया है। एक प्रोफेसर से विवाह के कारण उसके घरवाले सभी नाराज है। उन्हें इंदू का पति अपना बराबर वाला नहीं लगता। बहुत दिनों बात इंदू से घरवाले फिर से संबंध रखते है। इंदू की बहन मिसेज सरन उसे अपने घर बुलाती है। घर बुलाने का मुख्य कारण उसे अपना ऐश्वर्य दिखाना है। मिसेज सरन बार-बार अपने वैभव की बढ़ाईयाँ मारते हुए कहती है -''ये कहाँ घर रह पाते हैं ? काम ही इतना बढ़ा लिया है कि मरने तक को फुर्सत नहीं मिलती ! अभी- अभी तीन नयी मिले बंबई में और सेट की है। मैं तो कहती हूँ, क्या होगा इन सबका ? जो है वही दो पीढ़ी तक खत्म नहीं होने का पर ये मानें तब न !''[1] परंतु इन सभी बातों का इंदू पर कोई प्रभाव नहीं होता। मिसेज सरन का यह भरसक प्रयत्न रहता है कि वह उसकी शानदार कोठी को देखे, उसमें लगाएँ महँगे परदे, फर्निचर देखे। बीच-बीच में वह इन्दू की आर्थिक परिस्थिति की ओर भी इन्दू का ध्यान आकर्षित करवाती है। परंतु फिर भी इन्दू चूप रहती है। जिस दिन इन्दू वहाँ आती है उसी दिन उसके पति की चिढ्ढी आती है। यह देखकर मिसेज सरन हैरान हो जाती है। जबकि उन्हें पता नहीं है कि यह चिठ्ठी इन्दू घर से निकलने से दो दिन पहले हि पोस्ट की गई है। यह इन्दु और उसके पति के बीच स्थित प्यार का ही द्योतक है कि उसे जल्द ही चिठ्ठी भेजी जाती है। इन्दु भी अपने पति को पत्र लिखने बैठ जाती है। पत्रों के इस सिलसिले से मिसेज सरन के मन में सवाल उठता है - ''क्या लिखते होंगे ये पत्रों में ? विवाह को इतने वर्ष हो गये उन्होंने तो कभी नहीं लिखे।''[2] मिसेज सरन अपने पति और इन्दु के पति के इस अन्तर को देखकर थोडी कड़वाहट महसूस करती है। मिसेज सरन इन्दू को हीरों का हार देना चाहती है। परंतु वह उसे नहीं लेती, क्योंकि वह अपनी जैसी भी है उसी परिस्थिति में खुश है।इन्दु के माध्यम से लेखिकाने एक बहन से किसी भी प्रकार की अपेक्षा न रखनेवाली बहनका तो दूसरी तरफ बहन की कमजोर आर्थिक स्थिति पर फब्तियाँ कसती और अपने वैभव का प्रदर्शन करती बहन

1. मन्नू भंडारी -यही सच है, पृष्ठ. 75
2. वही, पृष्ठ. 79-80

ही चित्रित किया है।

'क्षय'कहानी की कुन्ती एक बहन के रूप में चित्रित हुई है।कुन्ती घर में सबसे बड़ी बेटी है। इसी कारण उसे घर की सारी जिम्मेदारी संभालनी पड़ती है। उसे अपने क्षय से बीमार पिता का इलाज करना पड़ता है। छोटे भाई टुन्नी की पढ़ाई का जिम्मा उसी पर है। उसका भाई एक बार फेल हो चुका है। इसीलिए वह उसे इलाहबाद के स्कूल में भर्ती करवाती है। वहाँ टुन्नी को फिर से आठवीं कक्षा में भरती किया जाता है। इसीलिए वह कुन्ती से शिकायत भी करता है। वह कहता है - ''उस दिन तुम मेरे हैडमास्टर साहब के पास चली जाती तो कितना अच्छा होता। पूरा एक साल बच जाता। तुमने मेरा इतना सा काम भी नहीं किया , दीदी, पूरा एक सवाल बिगड़वा दिया---।''[1] परंतु कुन्ती को किसी के सामने सिफारिश करना अच्छा नहीं लगता इसीलिए वह उसके हेडमास्टर से नहीं मिलती। टुन्नी के इलाहबाद जाने के कारण उसे भी टुन्नी की बहुत याद आती है। टुन्नी के बिना उसे अपना जीवन नीरस लगने लगता है। टुन्नी से वह प्यार भी बहुत करती है और यह भी सोचती है कि यह भार उसके कंधों से टुन्नी कब अपने कंधों पर लेगा। जब टुन्नी छुट्टियों में घर आता है तो कुन्ती बहुत खुश होती है और उसकी क्रिकेट मैच देखने की इच्छा को भी पूर्ण करती है। कुन्ती एक ऐसी बहन है जो छोटे भाई को प्यार भी बहुत करती है, उसकी जिम्मेदारी भी लेती है और कभी कभी जिम्मेदारी के इस बोझ से ऊबकर भाई को यह जिम्मेदारी सौंपना चाहती है।

'सजा' कहानी की आशा एक ऐसी बहन के रूप में चित्रित हुई है, जो विकट परिस्थिति में सहनशीलता से काम लेती है और बहन के कर्तव्य को बड़ी समझदारी से निभाती है। आशा के पिता को चोरी के झूठे आरोप में जेल भेंजा जाता है। मुकदमे का फैसला होने तक उन्हें तीन साल जेल में ही रहना पड़ता है। इस बीच उनका परिवार धीरे-धीरे टूटता जाता है। आशा और उसके छोटे भाई को उसकी चाची के पास भेजा जाता है। उसकी चाची अत्यंत क्रूर है। वह आशा से ही घर का सारा काम करवाती है और उसके छोटे भाई मुन्नू को बात-बात पर पीटती है। मुन्नु की हालत को देखकर आशा बहुत परेशान रहती और सोचती कि ''मुन्नू का रंग काफी साँवला पड़ गया था। चेहरा सूखकर मुरझा गया था और आँखे बड़ी सहमी-सहमी-सी लग रही थी। लगा, बहुत डरकर -दबकर रहता है शायद यहाँ। घर में तो कितना उधम

1. मन्नू भंडारी - यही सच है, पृष्ठ. 9

करता था। इतना -सा बच्चा कैसे उसने अपने को बदला होगा ? देखा, उसका काम था सालभर के बिट्टू को खिलाना। सारे दिन वह उसे गोदी में टाँगे-टाँगे फिरता। कब तो वह पढ़ता होगा कब वह होमवर्क करता होगा !''[1] आशा को मुन्नु की इस हालत पर बहुत तरस आता परंतु वह कुछ नहीं कर पाती। जब मुन्नू को पीटा जाता तब उसके रोने पर आशा उसे समझा-बुझाकर चूप करवा देती है और मन ही मन खूब रोती। आशा चाची को खुश करने के लिए घर का सारा काम करती है ताकि चाची मुन्नू को न पीटे। परंतु फिर भी बीच बीच में वह मुन्नु को पीट देती थी। मुन्नू करूणा भरी नजर से आशा की ओर देखता। आशा एक माँ की भाँति उसे प्यार करती, पूचकारती और यह आश्वासन देती कि जल्द ही हम अपने घर जाएँगे। इस प्रकार आशा छोटी-सी उम्र में इतनी समझदारी से छोटे भाई को बहन का प्यार देती है। डॉ. विवेकी राय ने अपनी पुस्तक ''हिन्दी कहानी- समीक्षा और सन्दर्भ में लिखा कि ''आशा और मुन्नू की इस कहानी में लोक-कथा वाले उस भाई-बहन की आत्मा है जो किसी विमाता के शासन में सूखते चले जाते हैं और तब बहन अपने भाई के लिए माता का काम करती है।''[2]

4. 2.6 प्रेमिका के रूप में :-

सृष्टि में प्रेम यह संकल्पना ही अत्यंत सुखद है। प्रेम ही मनुष्य में जीने की लालसा उत्पन्न करता है। स्त्री-पुरूष प्रेम में भी यही सत्य शामिल है। स्त्री -पुरूष प्रेम ही मनुष्य जाति का उत्पादक है। स्त्री-पुरूष प्रेम में स्त्री प्रेमिका की भूमिका अदा करती है। अपना प्रेमी बनाने की अपेक्षा वह किसी की प्रेमिका बनने में अधिक आनंदित होती है। परंतु कभी-कभी प्रेमिका के इस रूप को निभाते- निभाते उसे बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मन्नू भंडारी की बहुत-सी कहानियों में नारी के प्रेमिका रूप का चित्रण हुआ है। परंतु प्रत्येक कहानी की प्रेमिका अलग-अलग ढंग से चित्रित हुई है।

'गीत का चुंबन' कहानी की कुनिका निखिल की प्रेमिका के रूप में चित्रित हुई है। कुनिका की मुलाकात निखिल नामक युवक से होती है। कुनिका गाना गाने की शौकिन है। निखिल रेडियो पर उसका गाना सुनवाता है। इसी कारण दोनों में मित्रता हो जाती है और मित्रता, प्रेम में बदलती है। एक दिन जब कुनिका और निखिल घर में अकेले होते हैं तो निखिल उसका चुंबन लेता है। इस अनपेक्षित

1. मन्नू भंडारी - यही सच है, पृष्ठ. 66
2. डॉ. विवेकी राय - हिन्दी कहानी समीक्षा और सन्दर्भ, पृष्ठ. 154

व्यवहार से कुनिका उसे एक चाँटा मारती है। उसे निखिल का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगता क्योंकि वह स्त्री-पुरूष में मर्यादा को आवश्यक मानती है। कुनिका भी निखिल से प्रेम करती है, परंतु व्यक्त नहीं कर पाती। निखिल के इस व्यवहार से वह दुखी हो उठती है। परंतु बाद में पश्चाताप भी करती है। निखिल एक दिन उसके घर आकर उससे माफी भी माँगता है और बाद में एक पत्र भी भेजता है और उसमें भी माफी माँगता है। वह यह भी लिखता है कि वह उसकी जिंदगी से दूर जा रहा है। इस बात का कुनिका को बहुत दुख होता है और वह रो पड़ती है। कुनिका का प्यार बढ़ने से पहले ही समाप्त हो जाता है।

'एक कमजोर लड़की की कहानी' में रूप के असफल प्रेम का चित्रण किया गया है। रूप अपने पिता के घर से मामा के घर पर रहने जाती है। वहाँ ललीत नाम का लड़का है। वह अनाथ है। उसे मामा ने बचपन से पाला है। दोनों साहचर्य में प्रेम कर बैठते हैं। उनके प्रेम के विषय में कोई नहीं जानता। जब ललीत कुछ सालों के लिए विदेश जाता है तो उसकी गैरहाजिरी में रूप के पिता उसका विवाह एक वकील से कर देते हैं। रूप को अपना प्रेम भूलाकर पिता की खातिर विवाह करना पड़ता है। कुछ दिनों बाद ललीत उसके पति के घर आता है और उसे अपने साथ भाग चलने को कहता है। पहले तो वह मना करती है, परंतु बाद में ललीत की बातों को मान लेती है। रात को वह तैयारी भी करती है। परंतु पति के आते ही वह भाग जाने क फैसला छोड़ देती है। रूप एक ऐसी प्रेमिका है जो प्रेम किसी और से करती है और उसका विवाह किसी और से होता है। प्रेम की असफलता के सामने वह कुछ नहीं कर पाती।

'अभिनेता' कहानी में प्रेमी द्वारा धोखा खाई हुई प्रेमिका का चित्रण हुआ है। रंजना दिलीप नाम के व्यक्ति से प्रेम करती है। दोनों जल्द ही शादी करनेवाले हैं। इसी बीच दिलीप रंजना से बारह हजार रूपये लेकर गायब हो जाता है। रंजना उसके घर जाती है। तब वहाँ पता चलता है कि दिलीप ने उसे धोखा दिया है। उसके दराज में उसकी प्रेमिकाओं की चिट्ठीयाँ मिलती है। उसके पिता का पत्र भी मिलता है, उसे पढ़कर उसे मालूम होता है कि दिलीप की एक पत्नी और बेटी विदेश में भी है। उसने वहाँ भी किसी से रूपये उधार लिए हुए है। दिलीप की असलियत जानकर वह बहुत दु:खी होती है।

'त्रिशंकु' कहानी में किशोरवयीन प्रेमिका का चित्रण किया गया है। तनू की दोस्ती उसके ममी द्वारा उनके पड़ोस में रह रहे लड़कों से होती है। उसकी माँ आधुनिकता के नाम पर उनकी यह दोस्ती करवाती है। परंतु जब उन्हीं में से शेखर नामक लड़के से वह प्रेम करती है, तो उसकी माँ बहुत नाराज होती

है। माँ के इस रवैये से वह चौंक उठती है क्योंकि उसकी माँ ने अपने पिता से विरोध कर प्रेम विवाह किया है। माँ की इस त्रिशंकु वृत्ति से वह बहुत उदास होती है। इस विषय में सरिता कुमार अपनी पुस्तक ''महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरुप-विकास'' में लिखती हैं - ''इस तरह तनु की मम्मी स्वयं को दुविधा की स्थिति में पाती है, त्रिशंकु की तरह बीच में लटकी रहती है। वह न तो बेटी को पूरी आजादी देने के पक्ष में है और न उसे बाँधने के पक्ष में है।''[1]

'स्त्री सबोधिनी' कहानी मे 'मैं ' अपने कार्यालय के बॉस से प्रेम करती है। उसके प्रेम में पूरी तर डूब जाती है। उसका बॉस उसे हॉटलों में बुलवाता है। उससे शारीरिक संबंध रखता है। जब वह शादी की बात करती है तो वह उसे टालने का प्रयत्न करता है। बहुत सालों बाद 'मैं' को पता चलता है कि उसका बॉस शादीशुदा भी है और पिता भी । उसकी असलियत जानने के बाद वह उससे मिलना बंद कर देती है।

स्त्री प्रेम में जितना त्याग और समर्पण कर सकती है उसकी अपेक्षा पुरूष प्रेम में त्याग और समर्पण करने में असमर्थ रहता है। 'चश्मे' कहानी में यह स्पष्ट हुआ है।

शैल और निर्मल दोनों एक-दूसरे को बहुत चाहते हैं और जल्द ही उनका विवाह होनेवाला है। परंतु निर्मल अचानक चेचक की बीमारी से ग्रस्त हो जाता है। शैल उसकी जी-जान से सेवा करती है। वह यह भी नहीं सोचती कि उसे भी यह बीमारी हो सकती है। शैल की सेवा से निर्मल तो ठीक हो जाता है, परंतु शैल धीरे-धीरे क्षय की बीमारी का शिकार हो जाती है। निर्मल को पता चलते ही वह उससे मिलने नहीं जाता। एक दिन जाता है तो बाहर ही खड़ा रहता है उसके पास नहीं आता। उनके विवाह की तिथि 23 मई थी। इसीलिए शैल के पिता निर्मल को पत्र में बताते हैं कि अगर 23 तारिख को किसी भी तरह की शादी कर दी जाए तो शैल अच्छी हो सकती है। परंतु निर्मल किसी और से विवाह करता है। एक दिन निर्मल को तार आता है कि शैल की मृत्यु 23 मई को हो गई। शैल आखिर दम तक अपने प्रेमी का इंतजार करती है, परंतु वह नहीं आता। शैल प्रेम में अपनी जान तक दे देती है।

'यही सच है' में एक ऐसी प्रेमिका का चित्रण किया है जो इस दुविधा में है कि उसका पहला प्रेमी, जिसने उसे धोखा दिया वह उसका सच्चा प्रेमी है या जो आज मेरे साथ है वह ?

---

1 सरिता कुमार- महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरुप -विकास, पृष्ठ. 118

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

दीपा संजय नाम के युवक से प्रेम करती है। दोनो विवाह भी करनेवाले हैं। संजय से पहले दीपा की जिंदगी में निशिथ नामक युवक भी आया था। परंतु उसने दीपा को धोखा दिया। इसीलिए दीपा उससे बहुत नफरत करती है। नौकरी के इंटरव्यू के लिए दीपा को कलकत्ता जाना पड़ता है। वहाँ उसकी मुलाकात निशिथ से होती है। पहले तो वह इस मुलाकात से बहुत नाराज होती है। निशिद उसकी बहुत मदद करता है। उसकी जान-पहचान से दीपा को विश्वास दिलाता है कि यह नौकरी उसे ही मिलेगी। दीपा भी उससे मिलने को आतुर रहती है।उसके साथ वह हॉटेल जाती है, घुमने जाती है। वह पहचान लेती है कि निशिथ उससे कुछ कहना चाहता है। मगर दोनों भी चूप रहते हैं। दीपा चाहती है कि वह उसे बाहों में ले उसे स्पर्श करे। पिछली बातें भूलकर फिर से उसे अपने जीवन में आने को कहे। दीपा के मन में इतने बरसों से छिपा निशिथ के प्रति प्यार प्रस्फूटित होने लगता है। वह मन ही मन में कहती- ''मैं बुरा नहीं मानूँगी, जरा भी बुरा नहीं मानूँगी। मान ही कैसे सकती हूँ निशिथ ! इतना सब हो जाने के बाद भी शायद मैं तुम्हे प्यार करती हूँ - शायद नहीं सचमुच ही मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।''[1] दीपा निशिथ और संजय में तुलना कर निशिथ को सच्चा प्रेमी मानती है। निशिथ और अपनी बहुत-सी मुलाकातें याद करती है। कलकत्ते से निकलते समय निशिथ द्वारा किए गए स्पर्श को वह उसका प्यार मान बैठती है। उस स्पर्श को ही इतने दिनों की खामोशी के शब्द मान बैठती है। इसीलिए उसे लगने लगता है कि ''मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, बाकी सब झूठ है, अपने भूलने का, भरमाने का, छलने का असफल प्रयास ही।''[2] संजय के प्यार को वह भ्रम मानने लगती है। परंतु जब संजय उसके पास आता है उससे लिपटकर उसके स्पर्श को ही सत्य मानकर उसे अपना सच्चा प्रेमी मानती है।

इस कहानी की नायिका अपने पहले प्रेमी और दूसरे प्रेमी को चुनने में दुविधा महसूस करती है। कभी वह निशिथ को ही अपना जीवन-साथी बनाना चाहती है। परंतु बाद में संजय के प्रेम को ही सच मानती है। इस कहानी में प्रेम के त्रिकोण को चित्रित किया गया है। इस कहानी के विषय में डॉ. देव कपूरिया अपनी पुस्तक 'हिन्दी कहानी-साहित्य में प्रेम एवं सौंदर्य तत्व का निरूपण' में लिखती है कि ''इस कहानी में मन्नू भंडारी ने रोमानी, स्वप्निल, भावकता प्रधान एवं अशरीरी प्रेम को वायवी, अस्थायी

---

1. मन्नू भंडारी - यही सच है, पृष्ठ. 145

2. वही, पृष्ठ. 147

तथा अयथार्थ सिद्ध करते हुए उसके विपरीत व्यवहारिक अर्थात क्रियात्मक (शारीरिक) प्रेम के पक्ष का पोषण किया है। नायिका दीपा के माध्यम से संजय एवं निशिथ दो युवा पुरूषों के प्रति युवा नारी-हृदय की संवेदनशीलता का सूक्ष्म एवं व्यापक चित्रण कहानी में विद्यमान है। दीपा के प्रति निशिथ का प्रेम अन्तर्मुखता के कारण पूर्णत: अभिव्यक्त नहीं हो पाया है, उसकी तुलना में संजय और दीपा का संबंध शारिरीक के कारण अधिक ठोस एवं व्यवहारिक रूप में चित्रित किया गया है।''[1]

'ऊँचाई' नामक कहानी में शिवानी के माध्यम से एक ऐसी प्रेमिका का चित्रण किया गया है, जो विवाहित होते हुए भी अपने विवाहपूर्व प्रेमी अतुल से शारीरिक संबंध स्थापित करती है। परंतु अपने पति के सामने बिना डरे, इस बात का बरवान करती है। वह अपने पति को बताती है कि यह सब उसने कर्तव्य भावना से किया है, क्योंकि उसका प्रेमी असफल प्रेम के कारण जिंदा लाश बन चुका है। किन्तु फिर भी वह अपने पति को ही अपना सब कुछ मानती है। इसीलिए वह अपने पति से कहती है - ''तुम्हारे सिवाय और कोई बात ही मन में नहीं थी। शरीर पर चाहे वह छाया हुआ हो, पर मन पर तुम---- केवल तुम छाए हुए थे।''[2] वह अपने पति को अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान देकर एक ऐसी ऊँचाई पर बिठाती है कि जहाँ शायद ही कोई पतिव्रता स्त्री बिठा पाए। इस कहानी के विषय में डॉ. श्रीराम महाजन अपनी पुस्तक 'आधुनिक हिन्दी कहानी -साहित्य में काममूलक संवेदना' में लिखते हैं - ''पत्नी के विवाह बाह्य काम-संबंध के कारण दांपत्य संबंध में ऐसा कोई तूफान नहीं आता जो बाहयत: जीवन को तहस-नहस कर दे। कामविषयक आचरण की अस्वाभाविकता और परम्परागत नैतिकता के उल्लंघन को यहाँ सहज रूप से बर्दाश्त कर लिया गया है।''[3]

मन्नू भंडारी की अन्य कहानियों में भी विभिन्न नारी पात्र प्रेमिका के रूप में चिंत्रित हुए हैं जैसे - 'एक बार और' कहानी की कुंज, 'नकली हीरे' की इंदु तथा 'बाँहों का घेरा' की कम्मो आदि ।

4.2.7 नानी के रूप में :-

मन्नू भंडारी की केवल एकमात्र कहानी में नानी के रूप का चित्रण हुआ है। वह कहानी है

1. डॉ. देवकपूरिया - हिन्दी कहानी -साहित्य में प्रेम एवं सौंदर्य तत्व का निरुपण, पृष्ठ. 323-324
2. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 141
3. डा. श्रीराम महाजन - आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में काममूलक संवेदना, पृष्ठ. 130

'संख्या के पार'। प्रमिला को उसके नाना नानी ने पाला है। प्रमिला बचपन से यही सुनने को मिला है कि उसकी माँ कहीं भाग गई। इसीलिए उसकी नानी उसके लिए माँ है। कुछ दिनों बाद उसकी माँ उससे मिलने आती है। परंतु प्रमिला के नाना उसे मिलने नहीं देते। जबकि प्रमिला की नानी चाहती है कि उन दोनों का मिलाप हो। इसीलिए वह अपने पति से कहती है - ''मेरी बात तो सुन लो ---फिर जो तुम्हारी समझ में आए, करना--- वह तो यों ही बहुत दुखी है ----उसके ससुराल वालों ने उसका सौदा कर दिया और उड़ा दिया कि भाग गयी --- भाग गयी। हाय राम उन दुष्टों को नरक में भी जगह न मिले ---मेरी बेटी की जिन्दगी खराब कर डाली। कितने सालो से वह दुख भोग रही है और तुम हो कि -''[1] आखिर में प्रमिला के नाना मान जाते हैं और उसकी नानी माँ-बेटी का मिलन करवाती है।

4.2.8 विधवा के रूप में :-

मन्नू भंडारी की कहानी 'संख्या के पार' में प्रमिला की माँ का विधवा के रूप में चित्रण तो अवश्य हुआ है परंतु अस्पष्ट रूप से। उसकी बेटी के केवल एकमात्र जैसे वाक्य से ही पता चलता है कि उसकी माँ विधवा है। जैसे - ''धीरे- धीरे, छिपाए रखने के सारे प्रयत्नों के बावजूद यह सत्य मैं जान गयी कि विधवा होने के बाद माँ किसी के साथ भाग गयी।''[2] इसके अलावा कहीं भी उसके विधवा होने की बात कही नहीं गई। साथ ही विधवा होने के कारण उसके जीवन में आए बदलाव का चित्रण भी कहीं कहीं चित्रण हुआ है।

4.2.9 भाभी, ननद, जेठानी बहू और सास के रूप में :-

मन्नू भंडारी की एक ही कहानी में इन सभी नारी के रूपों का चित्रण मिलता है। 'आकाश के आइने में' कहानी में ननद, भाभी, जेठानी और सास जैसे रूप हैं। लेखा अपने पति के साथ शहर में रहती है। यही दोनों नौकरी भी करते हैं। लेखा पीएच् .डी. भी कर रही है। इसी भागदौड़ में वह बहुत कमजोर हो जाती है। पति के कहने पर हवा पानी बदलने के लिए अपने गांव अर्थात ससुराल जाती है। परंतु वहाँ का माहौल उसे सुख चैन आराम प्रदान नहीं करता। उसकी सास हमेशा घर की आर्थिक स्थिति को लेकर सारी जिम्मेदारी लेखा और उसके पति पर डालना चाहती है। जेठानी उसे बात- बात पर ताने देती

1. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 92
2. मन्नू भंडारी - एक प्लेट सैलाब, पृष्ठ. 87

है। अपनी ननद की हालत देखकर लेखा बहुत परेशान होती है। उसकी ननद किसी युवक से प्रेम करती है। परंतु घर में पता चलने पर उसकी माँ बहुत शोर मचाती है और उसका विवाह दूसरी जगह करने की सोचती है। उसकी ननद गौरा उसे बहुत प्यार करती है। उसके आते ही उसकी आवभगत में लग जाती है। उसे कुछ काम भी करने नहीं देती। गौरा चूप-चूप रहती है। लेखा चाहती है कि वह उससे कुछ बोले, बातें करे। परंतु वह चूपचाप ही रहती है।

इस प्रकार नारी के उपर्युक्त रूपों का चित्रण कम मात्रा में क्यों न हो, परंतु विवेच्य कहानियों में अवश्य मिलता है।

निष्कर्ष :-

मन्नू भंडारी ने अपनी विभिन्न कहानियों में नारी के जो विविध रूप चित्रित किए हैं उनमें नारी के प्रति लेखिका की संवेदना गहराई तक दिखाई देती है। लेखिका ने नारी को प्राय: सभी रूपों में चित्रित किया है।

प्रत्येक रूप में नारी को किसी न किसी मुसीबत का सामना करना पड़ा है। फिर भी नारी प्रत्येक रूप में जी रही है। पति हो तब भी उसे जीवन को कठिन परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है और पति न भी हो तो भी उसे सुखी जिन्दगी बसर करने को नहीं मिलती। वह जीवन में किसी न किसी द्वारा शोषित अवश्य रहती है। इसी पीड़ा को भी समझने में कोई समर्थ नहीं उसे उपेक्षित जीवन जीना पड़ता है। बहुत बार उसे पति के प्यार के लिए तरसना पड़ता है। किसी अनपढ़ नारी के साथ-साथ शिक्षित नारी भी किसी न किसी प्रकार प्रताड़ित की जाती है। वह नौकरी कर के भी पूरी तरह से स्वावलंबी नहीं बन पाती। घर में बड़ी होने के कारण नौकरी करके उसे अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं की बली चढ़ाकर परिवार का पालन-पोषण करना पड़ता है। नारी को प्रेम के नाम पर धोखा दिया जाता है। पुरूष पर एकदम विश्वास करने के कारण उसे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। उसे अपने और परिवार के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। दिन-भर मजदूरी करके निष्कृष्ट दर्जे के भोजन से पेट की आग शांत करनी पड़ती है।

ऐसा दुखमय जीवन जीनेवाली नारी कभी-कभी विद्रोह भी कर बैठती है। वह केवल सहनशीलता की देवी बनना पसंद नहीं करती। समय आने पर वह अपने पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ

हो जाती है। यह सब करते समय वह अपने स्वाभिमान को भी ठोस पहुँचने नहीं देती। स्वाभिमान के आड़े किसी को नहीं आने देती। परंतु कभी-कभी एक नारी दूसरी नारी को न समझने की भूलकर बैठती है। उसका व्यक्तित्व दूसरों पर हावी होने लगता है।

विवेच्य कहानियों में नारी रिश्तों के आधार पर विविध रूपों में चित्रित है। जहाँ माँ को प्यार और त्याग की देवी माना जाता है, वही एक कष्टदायी माँ के रूप में सामने आती है। आधुनिकता के नाम पर अपनी ही बेटी के प्रेम को नहीं समझ पाती। सौतेली माँ भी एक अच्छी माँ बन सकती है। परंतु वह उस बात को जाने बिना अपना रूप कैकयी के समान बना लेती है।

माँ अपने बच्चों के लिए दिन-भर मेहनत भी करती है। भले ही उसके मुँह में हमेशा गालियाँ और वह मारनेवाली हो, तब भी वह अपने बच्चों से बहुत प्रेम करती है। पत्नी के रूप में उसे उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।कभी-कभी पति द्वारा उसे धोखा भी दिया जाता है। वह पति के होते हुए अपने विवाह पूर्व प्रेमी से संबंध भी स्थापित करती है, जिसके लिए उसके मन में कोई अपराध भावना भी नहीं है।

बेटी होते हुए भी उसे सामान्य जीवन जीने का अवसर नहीं मिल पाता। नारी अपना सखी का रूप पूरी इमानदारी से निभाती है। वह बहन होने का अपना कर्तव्य पूरा करती है। प्रेम के सिलसिले में अधिकतर उसे असफलता को ही देखना पड़ता है। यह असफलता कभी उसे धोखो की वजह से मिलती है तो कभी हालात प्रेम की असफलता का कारण बनते हैं।

मन्नू भंडारी ने अपनी कहानियों में नारी के लगभग सभी रूप चित्रित किए हैं। उनकी कहानियों के नारी पात्र अपने में अनेक रूप समाएँ हुए हैं। क्योंकि अगर वह संघर्षशील नारी है तो परित्यक्ता भी है यहि वह प्रेमिका है तो बेटी भी।

****